



त्रिकाल-देवदन्दन विधि

—ॐ—

रत्नचन्द्रो बोधाय

बुद्धिमानों के धर्म का उद्देश्य

—सिद्धिंश्च गतं, उपरुं ।

श्री जिनबाणी प्रियार ग्रन्थमाला

अथवा १

गुरुद्वारा कृपा

[illegible]

दो शब्द

ग्रन्थमाला की तरफ से “त्रिकाल देव वन्दन विधि सामायिक पौषध विधि सहित” नामक पुस्तक भाई श्री रतनचन्दजी कोचर द्वारा संग्रह की हुई प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तक में सामायिक पौषध देववन्दन इत्यादि करने की क्रिया पूर्णरूप से लिखी गई है जिससे प्रत्येक सज्जन जिसको क्रिया विधि का सही ज्ञान नहीं हो सही तरीके से पार सकेगा। इस की आवश्यकता को हम कई दिन से अनुभव कर रहे थे, परन्तु कागज की कमी और सरकार द्वारा कागज पर नियंत्रण होने से पुस्तक का प्रकाशन नहीं हो सका। हमारा विचार इस पुस्तक की अधिक से अधिक कापिया छापने का था परन्तु अधिक सहयोग न मिलने से फिलहाल थोड़ी ही पुस्तकें छाप रहे हैं। परन्तु अगर इसकी उपयोगिता सिद्ध हुई तो दूसरा संस्करण जल्दी ही प्रकाशित कर देंगे।

इस पुस्तक को संग्रह करने का श्रेय श्री भाई रतनचन्दजी कोचर को है। और इन्हीं के प्रसंग से ही श्रीमान् वाडीलाल जीवराज शाह पालनपुर निवासी ने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक की शुद्धि अशुद्धि ठीक की है तथा प्रस्तावना भी लिखी है जिसके लिये दोनों सज्जन हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही भाई ईश्वरलालजी जैन ने अपने “आनन्द प्रेस” में इसको छापने और उसके प्रूफ संशोधन इत्यादि में जो सहायता दी है उसके लिये हम उनकी सराहना करते हैं। हमें आशा है कि इस पुस्तक से सज्जनवृन्द लाभ उठाकर हमारे परिश्रम को सफल करेंगे।

इस पुस्तक में शुद्धियों का पूर्ण ध्यान रखते हुए भी दृष्टि दोष से या प्रमादवश कोई भूल चूक रह गई हो उनको सुधार कर पढ़ने की कृपा करें। इति शुभम्। विनीत—

प्रबन्धक—श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला, जयपुर।

❀ प्रस्तावना ❀

सर्गारिष्टप्रणाशाय, सर्गभीष्टार्थदायिने ।

मर्लब्धिनिवानाय, श्री गौतमस्वामिने नमः ॥

इस “त्रिकाल देवचन्दन विधि—सामायिक पौषध विधि सहित” नाम की पुस्तिका “श्री जिनभाणी प्रचार ग्रन्थमाला” जयपुर की तरफ से प्रकाशित की जा रही है यह बड़े हर्ष की बात है । जो व्यक्ति विधि विधान के लिये रुचि तो रखता है लेकिन अनपठित होने के कारण या सत्रों के विस्मृत होने के कारण क्रिया नहीं कर सकता उसके लिये यह पुस्तक अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी, इसमें संदेह नहीं ।

गुजरात सौराष्ट्र में ऐसी पुस्तकें गुजराती भाषा में दली जाती हैं । किन्तु वे गुजराती भाषा भाषियों के लिये ही उपयोगी हैं लेकिन हिन्दी भाषा भाषियों के लिये ऐसी पुस्तिका की अत्यन्त आवश्यकता थी वे कभी अब इस “ग्रन्थमाला” की तरफ से प्रकाशित की हुई इस पुस्तिका से पूर्ण हो जायगी ।

आगे से तो इस जडवाट के जमाने में धर्म क्रिया के प्रति जो अभिरुचि होनी चाहिये वो कम होती जा रही है । जो क्रिया कर रहे हैं वे क्रिया का मर्म विशेष कम समझते हैं । परिणाम यह होता है कि क्रिया सम-वृत्ति ज्यादा देखने में नहीं आती । आज तो एकान्त ज्ञान को

मानने वाले वा एकान्त क्रियाकांडी बहुत मिलते हैं लेकिन वास्तव में ज्ञान के साथ २ क्रिया होने से ही उद्धार है । महान पूर्वधर श्री मद् उमास्वातिवाचक “तत्त्वार्थ सूत्र” में फरमाते हैं कि—

सम्पक्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः—

ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः—जैसे समुद्र में तरने का ज्ञान तो है किन्तु हाथ पांव नहीं हिलाने से वह कभी पार उतर सकता है ? तात्पर्य कहने का यह है कि ज्ञान और क्रिया दोनों ही साथ में होने से ही आत्मोन्नति का जीव साधक बन सकता है ।

मेरा खयाल है कि इस छोटीसी पुस्तिका के लिये ऐसी प्रस्तावना क्यों ? - लेकिन जो लोग ज्ञान के प्रति एकान्त ध्यान रखते हैं उनके लिये प्रथम क्रिया रुचि होने की आवश्यकता है और क्रिया रुचि होने के बाद जो विधि विधान से अनभिज्ञ हैं उनके लिये ऐसी पुस्तिका सहायतारूप होगी । ये किंचित बतलाने के लिये ज्यादा विवेचन किया गया है ।

मुझे यह प्रस्तावना लिखने का जो अवसर दिया गया है उसके लिये “श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला” और मेरे दीर्घकालीन मित्र भाई रतनचन्दजी कोचर का आभारी हूं ।

वि० सं० २००७ आसाढ़ दूजा

शुक्ल पंचमी गुरुवार

ता० २० जुलाई सन १९५०

भवदीय—

वाडीलाल जीवराज शाह,

पालनपुर (गुजरात)

❀ अनुक्रमणिका ❀

विषय	पृष्ठ
मामायिक लेने की विधि	१
मामायिक पारने की विधि	५
पौष्य विधि	६
पाऊण पोरिसी की विधि	२१
गुरु उदन	२३
देव दर्शन विधि	३१
पगम्खाण पाग्ने की विधि	४१
पौष्य में एगामण करने की विधि	४७
पौष्य में पणार (मात्रा या स्थिति) जाने की विधि	४८
मिर्क रात्रि के चार पहर का पौष्य लेने की विधि	४९
गुरु चार पहर का पौष्य लिया हो या—	
पीछे आठ पहर का पौष्य लेने की विधि	४९
पिछले पहर को पडिलेक्षण करने की विधि	५०
मधारा पोरिसी पडाने की विधि	५७
आठ पहर के तथा रात्रि के पौष्य पारने की विधि	६५
दिन के चार पहर का पौष्य पाग्ने की विधि	६९
देवयन्तन विधि	७०
मन्त्र त्रिगाग मज्जाप	८८

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५	११	समभल	समभाल
३५	१२	अतिरसाल	अतिहिरसाल
३५	१४	अभितर	अभ्यंतर
३५	१५	धणीयुं	धडीयुं
३५	१७	समी	सवि
३५	१८	पोख	पोप
३६	२०	सिद्धाए	सद्धाए
३८	१६	धम्मतित्थियरे	धम्मतित्थियरे
४१	१६	धम्मतित्थियरे	धम्मतित्थियरे
६३	२	अंतरंत	अतरंत
६४	५	मम	मह
६७	४	पारेमि	पारुं
६७	७	पारिअं	पायुं
६८	७	पारेमि	पारुं
६८	१०	पारिअं	पायुं
७३	६	कवल	कवड
८७	१४	पंचम	पंचमी
६०	१	विरोधी	विराधी
६१	१	नीमा	नियमा
६२	८	जन	जिन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६३	५	जापाजीम	जापजी
६३	१२	आठम	आठम ने
६८	६	उलठ	उलट
६८	२१	कभर	करभ
१००	७	नचे	नाचे
१०३	१३	अमृतदश	अप्लदश
१०४	१०	भल्ली	मल्ली
१०५	४	सथारे	संथारो
१०५	६	परिहरी	परिहारी
१०५	८	परिहरीण	त्रिखरीण
१०५	१३	दमामा	ददामा
१०६	५	विकसत	त्रिकमत
१०७	११	सानिध्य	मानिध्य
१०७	१६	गल	मंगल
१०७	२१	सुस्म	स्वरूप

शुद्धिपत्रम् के अलाग निम्न लिखी बातों को ध्यान में रखें—

१—आचार्य प्रमुख की स्थापना होने से नवकार पञ्चदिय की स्थापना करने की जरूरत नहीं ।

२—पौषध लेने की क्रिया गढ़े होकर करनी चाहिये ।

३—पद्मिलेक्षण में मुँहपत्ति के ५० बोल, घरबला का १०, आसन का २५ पदोरे का १०, घोती का २५ और जेप बख्रो का २५,

३ मायाशून्य, नियागाशून्य, मिथ्यात्वशून्य परिहर्तुं ।
डावे कंधे पर प्रतिलेखना करते:—

२ क्रोध, मान परिहर्तुं ।

और जीमणे कंधे पर:—

२ माया, लोभ परिहर्तुं ।

फिर मुँहपति नाभि नीचे नहीं लेजानी जिमने चरवलें से
प्रति लेखना करनी उसमें टावे घुटने पर:—

३ पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, की जयगा करुं ।
और जीमणे घुटने पर:—

३ वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय की रक्षा करुं ।

साधू व श्रावक ५० बोल गिने और साध्वी व श्राविका ३
लेश्या, ३ शल्य और ४ कषाय छोड़कर बाकी ४० बोल गिने ।





❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

त्रिकाल-देववन्दन विधि

(सामायिक फौफध विधि सहित)

(अथ सामायिक लेने की विधि)

श्रावक श्राविका सामायिक लेने में पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकार-वाली) आदि रखकर, जमीन पूजकर, आसन बिछाकर, चरबला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के गँये हाथ में मुहपत्ति मुखने आगे रखकर दाहिने हाथ को स्वापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के समुच्च करके नवकारमंत्र पढ़ें।

नमो अरिहंताय । नमो सिद्धाय । नमो आयग्याय ।
नमो उज्ज्वापाय । नमो लोए सच्चसादृणं । एसो पच
नमुदारी । सच्चपावप्परासणो । मंगलाय च सच्चवेत्ति । पढम
हवइ मंगलं ॥१॥

(ऐसे एक नवकार गिनकर)

पंचिदियसंवरणो, तद् नवविहवंभचेरगुत्तिधरो । चउ-
विहकमायमुक्को, इअ अट्टारस गुणेहिं मंजुतो ॥१॥ पंच मह-
व्ययजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो । पंचममिओ तिगुत्तो.
छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पंचिदिय कहे, यदि प्रथमसे उस स्थान पर आचार्य
प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहां पंचिदिय नहीं कहना । पीछे)

इच्छामि खमायमणो ! वंदितं जावणिजाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! इरियावहियं पडिक-
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिकमिऊं, इरियावहियाए, विरा-
हणाए गमणागमणे पाणकमणे वीयकमणे हरियकमणे
ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संक्रमणे, जे
मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-
दिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया,
संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं
संक्रामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकर-
णेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि
काउस्सगं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलमंचालेहिं, सुहुमेहिं
दिडिसंचालेहिं, एउमाइएहिं आगारेहिं अममो अपिराहियो
हुज्ज मे काउस्समो । जाय अरिहताणं भगवंताणं, नमुका-
रेणं न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण भाणेणं अप्पाणं
गेमिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नयकार का काउस्समग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते
कित्तइस्स, चउत्तीस पि केउली ॥१॥ उमममजिअ च वदे,
संभवमभिणदणं च सुमहं च । पउमप्पहं सुपास, जिण च
चंदप्पहं वदे ॥२॥ सुनिहिं च पुप्फदत्तं, मीअल-सिज्जेस
वासुपज्जं च । विमलमणं च जिण, धम्मं सतिं च
वढामि ॥३॥ कुधुं अर च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमि-
जिण च ॥ वढामि रिद्धिनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥४॥
एउ मए अभिधुआ, तिहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-
त्तीस पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्ति-
वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-
हिलाभ, समाहिउरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइचेसु अदिय पयासयरा । सागरउरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि
मम दिमंतु ॥७॥

(पीछे समासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छं”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
सामायिक संदिसाहुं ? “इच्छं” । इच्छामि खमासमणो
वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? “इच्छं”
(ऐसे कहकर दोनों हाथ जोडकर एक नवकार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरि-
याणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सब्बसाहूणं ।
एसो पंच नमुकारो । सब्ब पावप्पणासणो । मंगलाणं च
सब्बेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

[पीछे ‘इच्छकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी
ऐसे बोलकर ‘करेमि भंते’ स्वयं उच्चरे यदि गुरु या वडील हो तो
वे उच्चरावै]

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव
नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि समासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-
 आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन्
 बेसणे सदिसाहु ? “इच्छं” इच्छामि समासमणो वंदितुं
 जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण
 सदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ? “इच्छं” इच्छामि समास-
 मणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥
 इच्छाकारेण सदिसह भगवन् सज्जाय संदिसाहु ? “इच्छं”
 इच्छामि समासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए
 मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय
 करु ? “इच्छं”

[ऐसे कहकर दोनों हाथ जोड़कर तीन नवकार गुणना]

॥ इति सामायिक लेनेकी विधि सपूर्ण ॥

सामायिक लेने के बाद स्वाध्याय तथा नवकारवाली स्तवन
 आदि में समय व्यतीत करे, अथवा प्रतिक्रमण करे । ४८ मिनिट
 पूर्ण होने के बाद सामायिक पारे ।

— ❀ —

★ अथ सामायिक पारने की विधि ★

इच्छामि समासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-
 आए मत्थएण वंदामि ॥

कित्तइस्म, चउरीम पि केवली ॥१॥ उयममजिय च वदे,
 सभयमभिणदण च सुमडंच । पउमप्पह सुपास, जिण च
 चंदप्पह उद ॥ २ ॥ सुपिहि च पुप्फदंतं, मीअलसिज्जंस-
 वामुपुज्ज च । पिमलमण १ च जिण धम्म सति च
 वदामि ॥३॥ कुंबु' अरं च मल्लि, उदेमुणिसुव्वय नमिजिण
 च । उदामि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥ ४ ॥
 एय मए अभिउआ, निहुयरयमला पडीणजरमरणा ।
 चउरीमं पि निणयरा, तित्थयरा मे पमीयतु ॥ ५ ॥
 कित्तिय वदिय मइया, जे ए लोगस्म उत्तमा मिट्ठा ।
 आरुग्गनोहिलाभ, ममादियरमुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेमु
 निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिअपपासयरा । मगरअगमीरा,
 सिद्धा सिद्धिं मम टिमतु ॥ ७ ॥

इच्छामि समासमणो उदिउ जाणणिज्जाए निमीहिआए
 मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसड भगवन् मुहपत्ति
 पडिलेहुं ?

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे समासमण नेना—)

इच्छामि समासमणो वदिउं जाणणिज्जाए निमीहिआए
 मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसड भगवन् मामापियं
 पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि समासमणो उदिउ जाणणिज्जाए निमीहिआए

मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! मामायिग्रं पारित्रं ' तहत्ति '

(ऐसे कहकर दाहिने हाथको चरबले या आसन पर रखकर मस्तक झुकाकर एक नवकार मंत्र पढ़कर 'सामायिश्रवयजुतो' सूत्र पढ़े)—

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच
नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेयिं ।
पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायिश्रवयजुतो, जाव मणें होई नियममंजुतो ।
छिन्नइ असुइं कम्मं, सामाइअ जत्तिआ वारा ॥१॥ सामाइ-
अंमि उ कए, सनणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण
कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

मैंने सामयिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया,
विधिमें जो कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं ।

दस मनके, दस वचनके, वारह काया के ये कुल वत्तीस
दोषोंमें से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति सामायिक पारनेकी विधि संप्रमाप्ता ॥

(पौषध विधि)

जो श्राविक श्राविका पौषध करना चाहें उनको सुनह रई प्रतिक्रमण करना चाहिये, पौषध करने में इस प्रकार वस्त्रादि उपकरण होने चाहिये—मुहपत्ति, चरबला, उनी आमन, शुद्ध धोती, उतरासन, मात्रा के लिये जाते समय पहनने की धोती, नाक साफ करने का रुमाल या गेडिया, सिर व यदन पर ओढ़ने के लिये कम्बल, सथारिया—सोने के लिये, डडासन, गरम पानी, लग्न चूना पाना में डालने के लिए, मोते वक्त होना कानों के छेत्ने में जीय जल की धानना के लिए कुडल पानी रुई के दो फोरे ।

श्रावक श्राविका पौषध लेने में पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौरी (नानोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकार-वाली) आदि रखकर, जमीन पूजकर, आसन विद्याकर, चरबला और मुहपत्ति लेकर बैठें । बैठ के तौथे हाथ में मुहपत्ति मुगने आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के समुग्न करके नवकारमंत्र पढ़ें ।

नमो अग्निहाय । नमो मिद्राण । नमो आयत्रियाण ।
नमो उज्ज्मायाण । नमो लोण मन्त्रमाहण । एमो पच
नमुषागे । मन्त्रपात्रप्पणामणी । मगलाण च मन्त्रेभि । पटम
हण्ड मगल ॥१॥

(तमें एक नवकार गिनकर)

पंचिंदियसंवरणो, नह नवविहवंभचेरगुत्तिधरो । चउ-
विहकमायमुक्को, इअ अड्डारम गुणेहिं मंजुनो ॥१॥ पंच मह-
व्वयजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो । पंचसमिअो तिगुनो,
छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पंचिंदिय कहे, यदि प्रथमसे उस स्थान पर आचार्य
प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहां पंचिंदिय नहीं कहना । पीछे)

इच्छामि खमानमणो ! वंदितं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! इरियावहियं पडिक-
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिकमिऊं, इरियावहियाए, विग-
हणाए गमणागमणे पाणकमणे वीयकमणे हरियकमणे
ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडामंताणा संकमणे, जे
मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, वेइदिया, तेइंदिया, चउरिं-
दिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया,
संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं
संक्रामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकर-
णेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि
काउस्सगं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, ममलिए पित्तमुच्छाए,

सुदुमेहिं अगसचालेहिं, सुदुमेहिं खेलमंचालेहि, सुदुमेहि
दिडिमचालेहिं, एउमाडएहिं आगारेहिं अभग्गो अपिगाहियो
हुज्ज मे काउम्मग्गो । जाअ अरिहताण भगउताण, नमुका-
रेण न पारेमि ताअ काय ठाणेण मोणेण भाणेण अप्पाण
वोसिरामि ।

(यहा एक लोगस्स आ या चार नउकार का काउस्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथयरं जिणं । अरिहते
कित्तडस्स, चउमीस पि केउली ॥१॥ उमभमजिय च उंदे,
सभउमभिणदण च सुमड च । पउमप्पह सुपासं, जिणं च
चदप्पहं उद ॥२॥ सुनिहिं च पुप्फउत, सीअल-मिज्जम
वामुपुज्ज च । निमलमणत च जिण, धम्म सतिं च
वढामि ॥३॥ कुडुं अरं च मल्लि, उदे सुणिसुव्वय नमि-
जिण च ॥ उढामि गिड्डनेमिं, पाम तह वट्टमाण च ॥४॥
एअं मए अभिउया, निहययरमला पहीणजरमरणा । चउ-
मीस पि जिणउरा, तिथयरं मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिअ-
उदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा मिद्धा । आग्गो-
हिलाभ, समाहिउरमुत्तम दितु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा,
आडवेसु अहिय पयाययरा । मागअग्गभीरा, मिद्धा मिद्धि
मम दितु ॥७॥

(पीछे गमासमण दना)

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पौपध
मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “इच्छं”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना—)

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पौपध
संदिसाहुँ ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-
ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिमह
भगवन् ! पौपध ठाऊं “इच्छं”

ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड़कर एक नवकार नीचे मुजव गिनना ।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच
नमुकारो । सव्व पावप्पणामणो । मंगलाणं च सव्वेसिं ।
पढमं हवइ मंगलं ॥

[पीछे ‘इच्छकारी भगवन् पसय करी पौपध दंडक उच्चरावोजी
ऐसे बोलकर निम्न पोसह दंडक स्वयं उच्चरे यदि गुरु या बडील
हो तो वे उच्चरावै]

“करेमि भंते ! पोसहं, आहार-पोसहं देसओ सव्वओ,
सरीरसकार-पोसहं सव्वओ, वंभचेर-पोसहं सव्वओ, अव्वा-
वार-पोसहं सव्वओ, चउव्विहे पोसहे ठामि । जावदिवसं१

१ सिर्फ दिनका पौषध करना हो तो ‘जावदिवसं’ दिन रात
का करना हो तो ‘जाव अहोरत्तं’ और सिर्फ रातका करना हो तो
‘जावसेसदिवसं अहोरत्तं’ कहना चाहिये ।

पज्जुवामामि दुग्धिं तिग्धिहेण, मण्णेण वायाए कायेणं न
 करेमि, न कारवेमि । तस्स भते ! पडिक्कमामि, निंदामि,
 गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥”

इच्छामि एमाममणो वट्ठिउ जावणिज्जाए निसीहि-
 आए मत्थएण वढामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
 सामायिक मुहपत्ति पडिलेहु ? “इच्छं”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि एमाममणो वट्ठिउ जावणिज्जाए निमीहि-
 आए मत्थएण वढामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
 सामायिक सदिसाहु ? “इच्छं” । इच्छामि एमाममणो
 वट्ठिउ जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वढामि ॥
 इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? “इच्छं”
 (ऐसे कहकर दोनों हाथ जोड़कर एक नमस्कार नीचे मुजरा गिनना)

नमो अरिहताए । नमो सिद्धाए । नमो आयरि-
 याए । नमो उज्झायाए । नमो लोए सव्वसाहूए ।
 एमो पच नमुक्कारो । सत्त पाप्पणात्मणो । मगलाए च
 सव्वेमिं । पढम हउड मगलं ॥

[पीछे ‘इच्छाकारा भगवन् पसाय करी सामायिक वट्ठ उच्चारावोजी
 ऐसे बोलकर ‘करेमि भते’ स्वयं उच्चरं यन्ति गुरु या उडील हो तो
 वे उच्चरायें]

करेमि भंते ! सामाइयं, मावज्जं जोगं पच्चन्वामि । जाव
पोमहं पज्जुवामामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोमिगामि ॥

[पीछे]

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिमह भगवन्
वेसणे संदिमाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमाममणो वंदिउं
जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण
संदिमह भगवन् वेसणे ठाउं ? “इच्छं” इच्छामि खमाम-
मणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वंदामि ॥
इच्छाकारेण संदिमह भगवन् सज्जाय संदिमाहुं ? “इच्छं”
इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय
करुं ? “इच्छं”

[ऐसे कहकर दोनों हाथ जोड़कर तीन नवकार गुणना]

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! बहुवेलं

यदि पौषध मे राई प्रतिक्रमण करे तो अट्टाईजेसु सूत्र पढने
के पूर्व दो खमासमण देकर बहुवेलं संदिसाहुं और बहुवेलं करेमि,
का आदेश ले ।

मदिमाहुँ ? “इच्छ” इच्छामि समाममणो उदिउ जाणणि-
ज्जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छा कारेण
मदिमह भगवन् ! उहुवेल रुमेमि ? “इच्छ”

इच्छामि समाममणो उदिउ जाणणिज्जाए निमीहिआए
मत्थएण उदामि ॥ इच्छा कारेण मदिमह भगवन् पडिलेहण
करू ? “इच्छ”

पीछे मुहपत्ति, चरवला, आसन, कदोरा, (सूत की ब्रागडी)
और धोती, ये पांच चीजे पडिलेहे । पीछे पडिलहना की हुई धोती
पहिन ले और उसने गाल— पुन समाममण नेक

इच्छाकारेण मदिमह भगवन् ! इरियाउहिय पडिक्-
मामि इच्छ । इच्छामि पडिक्मिउ, इरियाउहियाए निराह-
णाए । गमणागमणे, पाणक्मणे, गीयक्मणे, हरियक्मणे,
ओसा उत्तिग-पणग-ढग-मट्टी-मक्कडामजाणा सरुमणे, जे
मे जीना निराहिया एगिदिया वेडदिया, तेडंदिया, चउरिं-
दिया, पचिंदिया, अमिहिया उत्तिपा, लेमिया, मघाड्या,
सघडिया, पगियागिया, मिलामिया, उदगिया, ठाणाओठाण
मंकाभिया, जीगियाओ वगगेगिया तस्म मिच्छामि दुक्क
तस्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण निमोहिरुणेण,
निमल्लीकरणेण, पायाण रुम्माण निग्वायणट्टाए, ठामि
काउम्मग ॥

अन्नत्थ ऊमसिएणं, नीमसिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुका-
रेणं न पारेमि ताव कायं टाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च
वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-
जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिधुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-
वीसं पि जिणवरा, तिथयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-
वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसंतु ॥७॥

- (पीछे समासमण देना)

इच्छामि समासमणो वदिउ जागणिज्जाए निमीहिआए
मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सँदिसह भगवन् ! पमाय
करी पडिलेहणा पडिलेहागोजी ? “इच्छं”

तेसा कहकर ब्रह्मचर्य व्रतधारी किमी बडे के उत्तरासन की
पडिलेहना करे । पीछे

इच्छामि समासमणो वदिउ जागणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सँदिमह भगवन् !
उपधि मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “इच्छं”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि समासमणो वदिउ जागणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सँदिसह भगवन् !
उपधि सदिमाहुँ ? “इच्छ” । इच्छामि समासमणो
वदिउ जागणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥
इच्छाकारेण सँदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहुँ ? “इच्छ”

कहकर प्रथम पडिलेहन से बाकी रहे हुए उत्तरासन (दुपट्टा)
मात्रा (पेशाव) करने जानेका वस्त्र और रात्रि-पौषध करना हो
तो सधारिया, कम्वल जगैरह वस्त्र पडिलेहे । पीछे डडामण
लेकर पडिलेहण करके फिर—

इच्छामि समासमणो । वदिउ जागणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ।

णाए । गमणागमणे, पाणकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे, ओसा उत्तिग-पणग-दग-मट्टी-मकडासंज्ञाणा संक्रमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया ब्रेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्म मिच्छामि दुक्खं ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण विमोहिकरणेण, विमल्लीकरणेण, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊमसिएणं, नीमसिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ वुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्म उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसममजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपामं, जिणं च

चटप्पहं वट ॥२॥ सुगिहिं च पुप्फदत्त, सीअल-सिज्जंस
 वासुपुज्जं च । विमलमणत्तं च जिण, धम्म संतिं च
 उदामि ॥३॥ कुबुं अर च मल्लि, उदे सुणिसुव्वय नमि-
 जिण च ॥ उदामि रिद्धनेमिं, पास तह वट्टमाण च ॥४॥
 गधं मए अभिबुआ, विहययमला पहीणजरमरणा । चउ-
 ग्रीम पि जिणउरा, वित्थयरा मे पमीयंतु ॥५॥ कित्तिप-
 वट्ठिय-महिया, जे ए लोगस्म उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-
 हिलाभ, ममाहिवग्गुत्तम दिंतु ॥६॥ चट्टेसु निम्मलयरा,
 आइच्चसु अहिय पपासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं
 मम दिसतु ॥७॥

यहाँ मैं तीन जगह "अणुजाणाह जस्सुग्गहो" वह काजा
 परत्तनना (टातना) और "वोसिरे" तीन ठप्के वह फिर पहिल
 की जगह आनर मजरे का देव बढन करना मो इसी पुस्तक में है।

यहाँ मैं जब उह घड़ा दिन चढे वत्र पऊण पोरिसी पढे ।

पऊण-पोरिसी की निधि

इच्छामि समाममणो उदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए
 मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् । उहपडि-
 पुएणा पोरिसी ? इच्छ

इच्छामि समाममणो उदिउ जावणिज्जाए निसीहि-
 आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् ।
 इगियावहिय पडिक्कामि इच्छ । इच्छामि पडिक्कामिऊ,

हणाए गमणागमणे पाणाक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे
ओसा उत्तिंग पणग दग मट्ठी मक्कडामंताणा संक्रमणे, जे
मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-
दिया, पंचिंदिया, अभिहया, वनिया, लेमिया, संघाइया,
संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उदविया, ठाणाओ ठाणं
संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसांहीकरं-
णेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि
काउस्सगं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीसमिएणं, खासएणं, छीएणं,
जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अंगमंचालेहिं सुहुमेहिं खेलमंचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्ठी संचालेहिं, एवमाइएहि आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमु-
क्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं
अप्पाणं वोसिरामि ।

[एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना. काउ-
स्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथियरे जिणे । अरिहंते
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उमभमजिअं च वंदे,
संभवमभिएंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपामं, जिणं च

चंदप्पहं पंदे ॥२॥ सुगिहिं च पुप्फदंतं, मीअल-सिज्जंम
 मासुपुज्ज च । विमलमणत्त च जिणं, धम्म संतिं च
 वंदामि ॥३॥ कुयुं अर च मल्लि, पंदे मुणिसुव्वयं नमि-
 जिणं च ॥ उदामि रिद्धनेमिं, पाम तह वद्वमाण च ॥४॥
 एव मए अभियुआ, पिट्ठयस्यमला पहीणजरमग्गा । चउ-
 वीस पि जिणपरा, तित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिप-
 वदिय-महिपा, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-
 हिलाभ, समाहिपग्गुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
 आइच्चेसु अहिय पयासपरा । मागरवरगभीरा, मिट्ठा मिट्ठि
 मम दिमतु ॥७॥

इच्छामि समाममणो वंदितु जागणिज्जाए निमीहि-
 आए मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
 राड मुहपत्ति पटिलेहुं ? “इच्छं”

(मुहपत्ति पटिलेहकर नीचे मुज्ज द्वाशावर्त उटना दने)

सुगुरुनटना सूरं

इच्छामि समाममणो वंदितु जागणिज्जाए निमीहि-
 आए अणुजाणह मे मिउग्गह निमीहि, अहोकाय काय-
 सफास, समणिज्जो मे किलामो अप्पकिलताण उट्ठुसुभेण
 मे राडयउड्ढतो ? जत्ता मे ? जगणिच्चं च मे ? एामेमि
 समाममणो राडय वड्ढम्म, आपस्मिआए पडिक्कामि,
 समाममणाण, गट्ठआए आमायणाए, तिच्चीमन्नपराए, ज

किंचि मिच्छाए मणदुक्काए वयदुक्काए कायदुक्काए
 कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए सव्व
 मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइकमणाए आसायणाए जो मे
 अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि
 गरिहामि अप्पाणं वोमिरामि ॥ (फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निमीहि-
 आए । अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं
 कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहु-
 सुभेण मे, राइअवइकंतो ? जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि
 खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासवणाए,
 राइआए आसायणाए तित्तीसनयराए, जं किंचि मिच्छाए
 मणदुक्काए वयदुक्काए कायदुक्काए कोहाए माणाए
 मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व
 धम्माइकमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स
 खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
 वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोउं ? 'इच्छं'
 आलोएमि । जो मे राइओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ
 माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो
 दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
 असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए ।

तिहं गुत्तीणं, चउहं रुमायाणं पचहमणुवयाण,
 तिहं गुणवयाण, चउहं मिक्खानयाण पारमविहस्स
 माग्गधम्मस्स जं सुडियं ज पिग्गहियं तस्म मिच्छामि
 दुक्खं ॥

सवस्सवि राडय दुच्चित्तिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ,
 इच्छाकारेण मदिमह भगवन् । “इच्छ” तस्म मिच्छामि
 दुक्खं ॥

(पन्यास आदि पदस्थ हों तो ऊपर मुजब हो नफे वादणा
 देना और पदस्थ न हों तो एर गमासमण देकर)

इच्छामि समासमणो उदिउ जानणिज्जाए निसीहिआए
 मत्थएण वदामि । “इच्छकारि सुहराड सुखतप शरीर
 निरापाध सुखसयम यात्रा निर्गहते होजी । स्वामी माता
 हैंजी भात पाणी का लाभ देनाजी ।”

इच्छामि समासमणो ! उदिउ जानणिज्जाए निमीहि-
 आए मत्थएण वदामि ॥

गमासमण देकर खडा होवे और दोनों हाथ जोडकर —

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् । अन्धुद्वियोमि अन्भि-
 तर राडयः खामेउ ? “इच्छ खामेमि राडय” जकिंचि
 अपत्तिअं, परपत्तिअ भत्ते पाणे पिणए वेयाअच्चे आलावे

क्ष्वारा वजे पीछे जहा “राडय” बोलना लिखा है वहा
 “देवसि” बोलना ।

सूरे उग्गाए, अन्नत्तडुं पञ्चखाइ । तिविहंपि आहारं—
 असणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं,
 पारिद्धावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब्वसमाहिवत्तिया-
 गारेणं । पाणहार पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुंडिसहिअं
 पञ्चखाइ; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं,
 दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सब्वसमाहिवत्ति-
 यागारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा,
 बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, अमित्थेण वा वोसिरइ ।

चउव्विहार उपवास—पञ्चखाण

सूरे उग्गाए अन्नत्तडुं पञ्चखाइ । चउव्विहंपि आहारं—
 असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसा-
 गारेणं, पारिद्धावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सब्वसमाहि-
 वत्तियागारेणं वोसिरइ ।

★ देव दर्शन विधि ★

पौषध लेने के पीछे श्री जिन मन्दिरजी में दर्शन करने को
 जरूर जाना चाहिये । इस वास्ते आसन को दायें कंधे पर रखना,
 उत्तरासन करना, चरवला दायीं वगल में और मुंहपत्ति दाहिने
 हाथ में रखना, काल का वक्त हो तो कमली ओढ़ना, और
 उपाश्रय (पौषधशाला) में से निकलते हुए तीनंदार “आवस्सहि”
 कहके मौन पने इरियासमिति (जीवजंतु) देखते हुए श्री जिन
 मन्दिरजी में जावे । वहां तीन वार “निसीहि” कह करके ।
 मूल नायकजी के सम्मुख होकर दूर से प्रणाम करके तीन प्रद-
 क्षिणा देवे ! पीछे रंग मंडप में प्रवेश कर दर्शन, स्तुति करे—

✽ दर्शन स्तुति ✽

दर्शन देव देवस्य, दर्शन पापनाशनम् ।

दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शन मोक्षमाधनम् ॥१॥

दर्शनाद् दुरितध्वमी, रन्दनाद् राज्ञिष्ठतप्रदः ।

पूजनान् पूरकः श्रीणा, जिन सात्वान् मुरट्टमः ॥२॥

त्रिजग नायक तु वणी, मही महोदो मशाराज,

महोदो पुण्ये पामियो, तुम दरिमण हूँ आज ॥३॥

आज मनोस्थ मणि कल्या, प्रगत्या पुण्यरुज्जोल,

पाप कर्म दूरे टल्या, नाटा दुःख ददोल ॥४॥

ज्ञानारणीय क्षय करी, दर्शनारणीय कर्म,

प्रेदनीय कर्म दूरे करी, दान्यु मोहनीय कर्म ॥५॥

इच्छामि तपाममणो रंजित जारणिज्जाण निमीहिआए

मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण मदिमह भगरन् ! हरियावहिय पडिक्-

मामि ! इच्छ इच्छामि पडिक्मिऊ, हरियावहियाए, निराइ-

णाए । गमणागमणे, पाणयमणे, पीयवमणे, हरियवमणे,

ओमा उत्तिग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडामाणा मरुमणे, जे

मे जीना निराहिया एगिंदिया पेडदिया, तेडदिया, चउरिं-

दिया, पचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेमिया, मघाडया,

सघट्टिया, परियात्रिया, तिलामिया, उट्टिया, ठाणाओठाण

मरामिया, जीमियाओ परोविया तस्म मिच्छामि दुक्कड ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहि करणेणं,
विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्वायण्डाए, ठामि
काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुका-
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भ्माणेणं अप्पाणं
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थियरे जिणे । अरिहंते
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च
वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मल्लिं, वंदे सुणिसुव्वयं नमि-
जिणं च ॥ वंदामि रट्टनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिधुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-
वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-

चंदिय-महिषा, जे ए लोगम्स उत्तमा सिद्धा । आरुगगो-
हिलाभ, ममाहिरगुत्तमं दितु ॥६॥ चढेसु निम्मलयरा,
आडचेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगभीरा, मिद्धा सिद्धि
मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि समाममणो पंदिउ जागणिज्जाए निसोहि-
आए मत्थएण वढामि ॥

(इस प्रकार तीन समाममण देकर—)

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! चैत्यउदन उरू ?

“इच्छ”

सरलकुशलगलि, पुष्करावर्तमेधो ॥

दुरिततिमिरभानुः, कल्प-वृक्षोपमान ॥१॥

भवजलनिधिपोत. सर्व सम्पत्ति हेतुः ॥

स भवतु सज्जतं व. श्रेयसे शान्तिनाथ

—श्रेयसे पार्ष्णनाथः ॥२॥

॥ चैत्यउदन ॥

आज देव अरिहन्त नमूं, समरु तोरा नाम ।

ज्या ज्या प्रतिमा जिनतणी, त्या त्या कर्हं प्रणाम ॥१॥

शत्रुञ्जय श्री आदि देव, नेम नमूं गिरनार ।

तारगे श्री यजितनाथ, यात्रु ऋषम जुहार ॥२॥

अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चोरीमी जोय ।

मणिमय मूरति मानस, भरते भराया सोय ॥३॥

समेत शिखर तीरथ वडा, ज्यां वीसे जिन पाय ।

वैभारक गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥४॥

मांडवगढ़ नो राजियो, नामे देव सुपास ।

ऋषभ कहे जिन समरतां, पंहुचे मन की आस ॥५॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।

जाई जिणविंवाई, ताई सव्वाई वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आङ्गराणं,

तिथ्यराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं,

पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं,

लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअग-

राणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,

सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मंदयाणं, धम्मदेसिआणं,

धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठीणं

॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं; विअट्ठउमाणं ॥७॥

जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं,

मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमय-

लमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनाम-

धेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥

जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले ।

संपइअ वट्ठमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जायंति चेड्माडं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाड ताडं पंढे, इह सतो तत्थ सताडं ॥१॥

इच्छामि समासमणो वदिउ जायणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण पंदाभि ॥

जायत केनि साह, भरहेखय महापिदेहे अ । सव्वेमिं
तेसिं पणयो, तिविहेण तिदंड विरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्गसाधुभ्यः ॥

श्री ऋषभदेवजी का स्तवन ।

जग जीवनजग बहाला हो, मारु देवीनो नंदलाल रे ।
सुख दीठे सुख ऊपजे, दर्शन अति ही आणद लालरे ॥१॥
आसडी अनुज पासडी, अष्टमी रासी समभल लालरे ।
चदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिरसाल लालरे ॥२॥
लक्षण अगे निरानता, अडहीय सहस उदार लालरे ।
रेखा कर चरणा दिके, अर्मितर नहीं पार लालरे ॥३॥
इंद्र चन्द्र रवि गिरितणा, गुण लह धखीयुं अग लालरे ।
भाग्य क्रिया थकी आनीयुं, अचिरज एह उत्तम लालरे ॥४॥
गुण सधला अंगे कर्या, दूर कर्या समी दोष लालरे ।
वाचक जश पिजये घुण्यो, देजो सुखनो पोख लालरे ॥५॥

उपसगहरं पास, पाम पदामि कम्मघणमुक्क । विसहर-
विमनिनास, मंगलरुक्खाण-आयास ॥१॥ विसहर फुलिगमत,

कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्म गहरोगमारी, दुइजरा
जंति उवसामं ॥२॥ चिड्डुउ दूरे मंतो, तुज्ज पणामो वि
बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगचं
॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिण् ।
पावंति अविग्गेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संधुओ
महायस, भत्तिव्भरनिव्भरेण हिअएण । ता देव दिज्जवोहिं,
भवे भवे पामजिणचंद ॥५॥

(अब दोनों हाथ जोडकर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ
भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इड्डफलसिद्धि ॥१॥
लोगविरुद्धाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो
तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि
निआण वंधणं वीअराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज
सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ,
समाहिमरणं च वोहिलाभो अ । संपज्जउ महएअं, तुहनाह
पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सगं, वंदणवत्तिआए,
पूअणवत्तिआए, सकारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, वोहि-
लाभ वत्तिआए, निरुवसगावत्तिआए, सिद्धाए, मेहाए,
धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि
काउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊममिणं, नीससिणं, रासिणं, लीणं,
जंभाणं, उड्डुणं, वायनिसग्गेण, भभलीणं, पित्तमुच्छाणं,
सुहमेहिं अगसचालेहिं, सुहमेहिं खेलमचालेहिं, सुहमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, एणमाडएहिं आगारेहिं अभग्गो अनिराहिओ,
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाण अरिहंताणं भगवंताणं नमु-
क्कारेणं न पारेमि ताण कायं ठाणेणं मोणेण भाणेणं
अप्पाणं पेसिरामि ।

(यहाँ एक नववार का काउस्सग्ग कर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-
पाध्याय सर्वमाधुभ्य ” कह कर शुद्ध कहना) —

आदि जिनर राया जाम सोनन काया,
मल्लदेवी माया, धोरी लंछन पाया ।
जगत् स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवल सिंगीराया मोक्ष नगरी मिधाया ॥१॥

फिर प्रभु के सम्मुख पञ्चस्वाण करना, पीछे जिन मन्दिर
जी से निपलते हुये तीन दफे “आनस्सहि” कहना और उपाश्रय
में तीन दफे “अनसीहि” कह कर प्रवेश करना और १०० पायदंड
भूमि से आगे गया हो तो इरियान्हि करके —

इच्छामि समासमणो वंदिउ जाणमिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि ?

इच्छाकरेण सद्विमह भगवन् ! इरियान्हियं पडिक्क-
मामि ! इच्छ इच्छामि पटिक्कमिऊ, इरियान्हियाए, निराह-

हुई होय, तै सविहुं मन वचन काया ए करी मिच्छामि
दुक्कडं ॥

(इसके पश्चात् दोपहर में देववन्दन करना चाहिए जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस में सज्जाय न बोले। देववन्दन अकाल में (११॥ वजे से १२ वजे तक) न करें। यदि वर्षा ऋतु (आषाढ सुदी १५ से कार्तिक सुदी १४ तक) में दोपहर के देव-वन्दन से पहिले भूमि प्रसार्जन करना आवश्यक है, इन दिनों में तीन बार पहिले भूमि प्रसार्जन करना चाहिए। उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १७ की १८ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १३ पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें।

पञ्चक्खाण पारने की विधि

एगासण, एकलठाणा, आयंवील, आदि तिविहार उपवास के व्रत का पञ्चक्खाण पारना होतो निम्न प्रकार से क्रिया करे। परन्तु मव्याह्न का देववन्दन करके पञ्चक्खाण पारे।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्क-
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराह-
णाए, गमणागमणे, पाणाकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे,
ओसा उतिंग-पणाग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे
मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-

दिया, पचिदिया, अभिहया उत्तिया, लेसिया, मंवाड्या,
मवडिया परियागिया, किलामिया, उदगिया, ठाणाओठाण
मकामिया, जीगियाओ पनगेगिया तस्स मिच्छामि दुक्ख ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण निमोहिकरणेण,
निमल्लीकरणेण, पापाण कम्मण निग्घायण्ढाए, ठामि
काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उममिण्ण, नीसमिण्ण, खासिण्ण, छीण्ण,
जंभाइण्ण, उट्टुण्ण, नायनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए,
सुट्टुमेहिं अगसचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलमचालेहिं, सुट्टुमेहिं
दिट्ठिमचालेहिं, एणमाइएहिं आगारेहिं अमग्गो अपिराहिओ
हज्ज मे काउस्सग्गो । जाअ अरिहताण भगरताण, नमुक्का-
रेण न पारेमि ताअ काय ठाणेण मोणेण भ्हाणेण अप्पाण
नेमिरामि ।

(यह। एक लोगस्स का या चार नद्वार का काउस्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्म उज्जोअगरे, धम्मतित्थियरे जिणे । अरिहते
रुक्कइस्स, चउत्तीम पि केउली ॥१॥ उसभमजिअं च वदे,
मभयमभिणट्ठणं च सुमड च । पउमप्पह सुपास, जिणं च
चटप्पहं वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फटत, सीअल-सिज्जम
नामुपुज्जं च । निमलमणत च जिण, धम्म सतिं च
उदामि ॥३॥ कुबु अर च मल्लिं, वदे सुणिसुअय नमि-

जिणं च ॥ वंदामि सिद्धिनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
 एवं मए अभिधुआ, विहुयस्यमला पहीणजरमरणा । चउ-
 वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्ति-
 वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-
 हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
 आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि-
 मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निमीहि-
 आए मत्थएण वंदामि ॥

(खमासमण देकर—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ?
 “इच्छं”

जगचिंतामणि चैत्यवंदन

जगचिन्तामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव
 जगमत्थवाह, जगभावविअक्खण, अठावयसंठवियरूव,
 कम्मवृणिणसण, चउवीसंपि जिणवर जयन्तु, अप्पडिहय-
 सासाणं ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंधयणि,
 उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ । नव-
 कोडिहिं केवलीण, कोडीसहस्स नव साहु गम्मइ । संपइ
 जिणवर वीस मुणि, विहुकोडिहिं वरणाण, समणह कोडी-
 सहस्स दुअ, धुणिजिअ निच्च विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय

जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जित पहु नेमिजिण,
जयउ धीर सच्चउरिमडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरि-
पास दुहदरियसडण, अन्नरविदेहिं तित्थयरा, चिहु दिसि
विदिसि जिं के पि तीआणागयसपडअ नदु जिण सव्वेपि
॥३॥ सत्ताणउड सहम्मा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ ।
वत्तिसय वासियाडं, त्रियल्लोए चेडए वंदे ॥४॥ पन्नरस
कोडिसयाडं, कोडि वायाल लक्ख अडउन्ना । छत्तीस सहस
असिडं (असियाड), सामयनिनाड पणमामि ॥५॥

जं किंचि नामतित्थ, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाडं जिणनिनाडं, ताड सव्वाडं वदामि ॥१॥

नमुत्थुण अरिहताण भगवताणं ॥ १ ॥ आइगराणं,
तित्थयराण, सयंसयुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण,
पुरिसन्नरपुडरीआण, पुरिसन्नरगंवहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाणं,
लोगनाहाण, लोगहियाण, लोगपद्माण, लोगपज्जोअग-
राण ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण,
सरणदयाण, बोहिट्टयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मदेसियाण,
धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मपरचाउरतचक्खुट्ठीण
॥६॥ अप्पडिहयन्नराणदसणधराण, त्रियट्ठउमाण ॥७॥
जिणाण जाययाण, तिन्नाण तारयाण, उद्धाण मोहयाण,
मुत्ताण मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूय सन्नदरिसीण, सिन्नमय-
लमरुअमणतमस्सयमन्नानाहमपुणरावित्ति, मिट्ठिगटनाम-

धेयं, ठाणं मंपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअमयाणं ॥६॥
 जे अ अइआ मिद्धा, जे अ भविस्संतिणाए काले ।
 संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिचिहेण वंदामि ॥१०॥

जावंनि चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
 सव्वाइं ताइं वंदे, इह मंतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमाममणो वंदितुं जावणिज्जाए निर्माहि-
 आए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि माहू, भरहेरवय महाविदेहे अ । सव्वेमिं
 तेसिं पणओ, तिचिहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हतिगद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पामं वंदामि कम्मवणमुक्कं । विसहर-
 विमनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिं गमंतं,
 कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्म गहरोगमारी, दुड्डंजरा
 जंति उवसामं ॥२॥ चिड्डुउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि
 बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगचं
 ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवच्चमहिण ।
 पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संधुओ
 महायस, भत्तिव्वरनिव्वरेण हिअएण । ता देव दिज्जवोहिं,
 भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ

भयम् । भयनिन्वेद्यो मग्गाणुसारिया इड्डफलसिद्धि ॥१॥
 लोगनिद्रुद्धाओ, गुरुजणपूआ परत्थकुरण च । सुहगुरुजोगो
 तन्वयणसेवणा आभयमसंडा ॥२॥ वारिज्जड जड नि
 निआण ववण वीअगय तुह समए । तह नि मम हुज्ज
 सेगा, भये भवे तुम्ह चलणाण ॥३॥ दुक्खसओ रम्मसओ,
 समाहिमण च बोहिलाभो अ । सपज्जउ महएअ, तुहनाह
 पणाम करखेण ॥४॥ सर्वमंगलमागल्य, सर्वकल्याणकारणम् ।
 प्रधान सर्ववर्माणा जैन जयति शामनम् ॥५॥

इच्छामि समासमणो यदिउ जाअणिज्जाए निमीहिआए
 मत्थएण उदामि ? इच्छाकरेण मदिसह भगवन् ! सज्जाय
 कळ ११ ' इच्छ'

(एक नवकार नीचे मुजव गिनना)

नमो अरिहताण । नमो मिद्धाण । नमो आयरियाण ।
 नमो उपज्झायाण । नमो लोए सव्वसाहूण । एमो पच नमु-
 षारो । सव्वपाअप्पणामणो । मंगलाणं च मन्नेसिं पढम
 हवड मगल ॥१॥

फिर मन्नह जिणाण सज्जाय निम्न प्रकार से कहना—

अथ मन्नह जिणाण सज्जाय ।

मन्नह जिणाणमाण, मिच्छ परिहरह धरह सम्मत ।
 छव्विह आअस्सयम्मि, उज्जत्तो होड पडदिअम् ॥ १ ॥
 पवेमु पोमहअय, दाण सील तपो अ भाओ अ ।

मुंह पूंछ कर (प्रसार्जन कर) हो मकें जय तक मुनि महाराज को बोहरा कर निश्चल (स्थिर) आसन से सौन रग्व आहार करना, अँठा नहीं डालना और थाली धोकर पीना, बगैर कारण स्वादिष्ट आहार और लविगादि तांत्रुल (मुखवास) न लेना और मुख शुद्ध कर दिवस चरिम तिविहार का पञ्चक्खाण करना और जिसको घर न जाना हो, वह पहले पुत्र नौकरादि को कहा हो उसका लाया हुआ आहार ऊपर लिखि विधि से पौपधशाला में ही करे और फिर बाद पौपधशाला में आकर “इरियावहि पडिक्कम” कर (सो पावंडे हों तो गमणागमणे आलोय कर) पुनः जगर्चितामणि का चैत्यवन्दन जयवीरराय तक करना ।

पौपध में पेशाव (मात्रा वा स्रंडिल) जाने की विधि ।

पेशाव व पाखाने जाने के वक्त पहनने को धोती पहनना, कामली का काल हो तो सिर व वदन पर कामली ओढ़नी, मुंहपत्ति कंदोरे में रखनी, चरवला डाव्री बगल में रखना, रात का वक्त हो तो दंडासन से इरियासमिति सोधते चलना । पेशाव करना हो तो कूंडी पूंजकर उसमें पेशाव कर परठवने (पेशाव जमीन पर डालने) की जगह कूंडी रखनी, निर्जीव जगह देख “अणुजाणह जस्सुगो” कह कर पेशाव जमीन पर डालना, फिर कूंडी नीचे रख तीन दफे “वोसिरे” कहना और कूंडी अचित्त जल से धोकर उसके स्थान पर रख फिर अपने हाथ धोना ।

पाखाने जाना हो तो निर्जीव जगह देख “अणुजाणह

जस्सुगो" कहकर पाखाने जाना और शुद्धि करके तीन दफे "बोसिरे" कहना और वापिस आकर हाथ पग धोना और पाखाने की शका दिनही को निवारण कर लेनी चाहिये क्योंकि रात्रि को पाखाने जाने में जीव जंतु की जतना न रहने से बहुत दोष लागता है और जाना ही पड़े तो १०० हाथ जगह के अंदर जाना, धोती बदलने याद इरियावहि पडिक्खना ।

सिर्फ रात्रि के चार पहर का पौषध लेने की विधि ।

रात्रि के चार पहर का पौषध लेने वालों को पडिलेहण और देवयदन की म्रिया दिन में ही करने की है जिससे पौषध जल्दी शुरू करना चाहिये । उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ ६ वे से आरम्भ होकर पृष्ठ १५ की ३ पक्ति तक (बहुवेल करेमि ? "इच्छ" तक) दिया है उसके अनुसार कर के बाद में शाम के पडिलेहण में इच्छामि० समासमण देकर "पडिलहण करु ? इच्छ" में शुरू करे । उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे "पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि" में है, उसके अनुसार करें ।

सुबह चार पहर का पौषध लिया हो और पीछे—

आठ पहर का पौषध लेने की विधि ।

पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि में "गमणा-गमणे" आलोचकर, फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ १० की ७ वीं पक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ १५ की ३ पक्ति तक (बहुवेल करेमि ? "इच्छ" तक) दिया है उसके अनुसार करे परन्तु "सज्जाय

करूँ” की जगह “सञ्जाय मे हूँ” कहना और तीन नवकार की जगह १ नवकार गिनना । फिर बाद में शाम के पडिलेहण में “इच्छामि० खमासमण देकर “पडिलेहण करूँ ? “इच्छं” से शुरू करे । उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे “पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि में है । उसके अनुसार करे ।

पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि ।

(मुनिराज ने स्थापनाचार्य की पडिलेहणा की हो उसके सामने छः घड़ी दिन रहे उस समय पडिलेहण करना, स्थापना-चार्य की पडिलेहण किये पहिले पडिलेहण नहीं होती ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
बहुपडिपुएणा पोरिसी ? “इच्छं”

(पुनः खमासमण देकर इसी पुस्तक के पृष्ठ ३७ के १८ वीं पंक्ति से प्रारम्भ करके पृष्ठ ४० की २ पंक्ति तक (“गमणागमणे” आलोय तक) दिया है उसके अनुसार क्रिया करे । पीछे:—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
पडिलेहण करूँ ? “इच्छं”

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
पोषधशाला प्रनाजू ? “इच्छं”

(कह उपवास वाले को मुहपत्ति, चरवला, आमन, पडिलेहना और एसासणादि करने वाले को कटोरा (सूत की तागडी) व धोती समेत पांच उपकरण पडिलेहन करके गमा-समाण देकर इरियाउहि पडिक्म करके)

इच्छामि खमासमाणो वंदिउ जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पमाय करी पडिलेहणा पडिलेहागोजी ? “इच्छ”

ऐसा कहकर ब्रह्मचर्य धतधारी किमी उडे के उत्तरासन की पडिलेहना करे । पीछे

इच्छामि खमाममाणो वदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ! उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छ”

ऐसे कहकर मुत्पत्ति पटिलेहना । पीछे

इच्छामि गमाममाणो वदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ! मज्झाय कट्टं ? “इच्छ”

एष तथकार पढ़कर “मञ्जु चित्तान” की मज्झय उपड बैठ (गडें पुटने बैठ) कर जाता ।

नमो अग्निताणं । नमो मिद्धाण । नमो आयगियाणं ।

नमो उवञ्जायाणं । नमो लोए मव्वसाहूणं । एसो पंच नमु-
क्कारो । सव्वपावप्पणामणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं
हवइ मंगलं ॥१॥

अथ मन्नह जिणाणं सज्जाय ।

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।
सज्जाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥
जिणपूआ जिणधुणणं, गुरुधुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥
उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ।
धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।
सड्ढाण किच्चमेअं, निव्वं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥इति॥

(फिर भोजन किया हो तो द्वादशावर्त्त वन्दना देवे, इसी
पुस्तक के पृष्ठ २५ की १५ वीं पंक्ति से प्रारम्भ होकर पृष्ठ २६
की १६ पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें । और तिविहार
उपवास वाला सिर्फ खमासमण दे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
पसायकरी पच्चक्खाण का आदेश दीजियेजी ।

ऐसा कहकर पाणहार का पञ्चस्त्राण करे ।॥

पाणहार-पञ्चस्त्राण

पाणहार दिनसचरिम पञ्चस्त्राह । 'अन्नत्थणाभोगेणं,
सहसागारेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिमत्तियागारेण
चोसिरइ ।

इच्छामि एमासमणो वढिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
उपधि संदिसाहुं ? "इच्छ" । इच्छामि एमासमणो वढिउं
जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण
सदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहुं ? "इच्छ"

कहकर प्रथम पटिलहन से बाकी रहे हुए उत्तरासन (दुपट्ट)
मात्र। (पेशान) करने जाने का वस्त्र ओर रात्रि-पौषध करना हो
तो सवारिया, कमल बगैरह वस्त्र पडिलेहे । पीछे डंडासण
लेकर पडिलेहए करके फिर एमासमण देकर इरियावाह पडिक्कम
करके कुडा कचरा निकाले उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ
१७ की १८ वीं पक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १२ वीं

छिचउन्निहार-उपवास किया हो तो इस वक्त पञ्चस्त्राण
करने की जरूरत नहीं है, परन्तु मुनह तिन्निहार का पञ्चस्त्राण
किया हो और पानी न पिया हो तो इस वक्त चउन्निहार-उपवास
का पञ्चस्त्राण करे । उसका पञ्चस्त्राण इस पुस्तक के पृष्ठ ३०
में दिया है ।

पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें । पीछे देववन्दन करना, जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस समय भी सज्जाय न बोले । जिसने आठ पहर का पोसह लिया हो या जिसने केवल रात्रि-पौषध किया हो वह देववन्दन करके पीछे कुण्डल (कान में डालने के लिये रुई), डंडासन और रात्रि की शुचि के लिए चूना डाला हुआ अचित पानी याचना करके लेवे । पीछे—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्क-
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराह-
णाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे,
ओसा उत्तिंग-पण्ण-दग-मट्ठी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे
मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-
दिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया,
संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओठाणं
संक्रामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणं, पायच्छित्तकरणं विसोहिकरणं,
विसल्लीकरणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि
क्राउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भम्मलिए पित्तमुच्छाए,

सुदुमेहिं अंगसचालेहिं, सुदुमेहिं खेलसचालेहिं, सुदुमेहिं
दिट्ठिमचालेहिं, एउमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अपिराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाअ अरिहताण भगवताण, नमुक्का-
रेण न पारेमि ताअ कायं ठाणेण मोणेण भाणेण अप्पाण
गेमिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थपरे जिणे । अरिहते
क्खित्तइस्स, चउत्तीसं पि केउली ॥१॥ उमभमजिअ च वदे,
सभउमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पहं सुपास, जिण च
चउप्पहं वदे ॥२॥ सुनिहिं च पुप्फटत, मीअल-सिज्जंस
वासुपुज्जं च । निमलमणत च जिणं, धम्मं सत्तिं च
वदामि ॥३॥ कुबु अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वय नमि-
जिण च ॥ वदामि रिद्धिनेमिं, पास तह उद्धमाण च ॥४॥
एअ मए अभियुआ, निहुयस्यमला पहीणजरमरण । चउ-
त्तीस पि जिणउरा, तित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ क्खित्तिय-
वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-
हिलाभ, समाहिउरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चउसे सु निम्मलपरा,
आइव्वेसु अहिय पयामपरा । मागरवरगभीरा, मिद्धा मिद्धि
मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निर्माहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
थंडिल पडिलेहुँ ? “इच्छं”

ऐसा कहकर नीचे लिखे अनुसार चौबीस मंडले करें ।

ये मंडल रात्रि में बड़ी नीति लघुनीति (पाखाना, पेशाब)
वगैरा परठवने लायक जगह देखने (प्रति लेखन करने) के लिये हैं,

१ आघाडे आसन्ने उच्चारें पासवणे अणहिआसे ।

२ आघाडे आमन्ने पासवणे अणहिआसे ।

३ आघाडे मज्जे उच्चारें पासवणे अणहेआसे ।

४ आघाडे मज्जे पासवणे अणहिआसे ।

५ आघाडे दूरे उच्चारें पासवणे अणहिआसे ।

६ आघाडे दूरे पासवणे अणहिआसे ।

संधारा के पास की जगह इस माफिक छः मंडल करना:—

१ आघाडे आसन्ने उच्चारें पासवणे अहिआसे ।

२ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ।

३ आघाडे मज्जे उच्चारें पासवणे अहियासे ।

४ आघाडे मज्जे पासवणे अहिआसे ।

५ आघाडे दूरे उच्चारें पासवणे अहिआसे ।

६ आघाडे दूरे पासवणे अहिआसे ।

उपासरे के वारने के अन्दर की तरफ इस माफिक छः मंडल करना:—

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारें पासवणे अणहिआसे ।

२ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहिआसे ।

३ अणाघाडे मज्जे उच्चारें पामरणे अणहिआसे ।

४ अणाघाडे मज्जे पासरणे अणहिआसे ।

५ अणाघाडे दूरे उच्चारें पासरणे अणहिआसे ।

६ अणाघाडे दूरे पामरणे अणहिआसे ।

उपाश्रय के धारने के बाहर नजदीक रहकर छ मडल करना —

१ अणाघाडे आमन्ने उच्चारें पासरणे अहिआसे ।

२ अणाघाडे आसन्ने पामरणे अहिआसे ।

३ अणाघाडे मज्जे उच्चारें पासरणे अहिआसे ।

४ अणाघाडे मज्जे पामरणे अहिआसे ।

५ अणाघाडे दूरे उच्चारें पासरणे अहिआसे ।

६ अणाघाडे दूरे पासरणे अहिआसे ।

उपाश्रय में सौ हाथ के अन्दाज दूर रहकर छ मडल करना —

इन मडलों वाली जगह पहले से ही देर रखनी और मडल स्थापनाजी के पास रहकर बोलते वक्त उन उन जगह पर दृष्टी का उपयोग (ध्यान) रखना ।

२४ मडल करने के बाद इरियावहि पढिक्कम कर चैत्यवन्दन के साथ देवसी या पात्तिकादि (पम्पों वगैरा) प्रनिव्रमण करे ।

सथारा पोरिमी पढाने की विधि

यदि रात्रि-गोपध हो तो पढिक्कमण करने के बाद सथारा पोरिमी के समय तक स्वाध्याय, ध्यान, धर्म-धर्चा वगैरह करे । पीछे

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
बहुपडिपुएणा पोरिसी ? तइत्ति;

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिके-
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिकमिउं, इरियावहियाए, विराह-
णाए, गमणागमणे, पाणकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे,
ओसा उतिंग-पणग-दग-मट्टी-मकडासंताणा संकमणे, जे
मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-
दिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया,
संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उदविया, ठाणाओठाणं
संक्रामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं,
विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्वायणट्ठाए, ठामि
काउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्स अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-

रेण न पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेण भाणेणं अप्पाण
वोसिरामि ।

(यहाँ एक लोगस्स का या चार नवकार का काउत्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते
कित्तइस्सं, चउनीसं पि केउली ॥१॥ उसभमजिअं च वदे,
सभममभिणंदणं च सुमइ च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च
चंदप्पहं वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत, सीअल-सिज्जसं
वासुपुज्जं च । निमलमणतं च जिण, धम्म संतिं च
वंदामि ॥३॥ कुंधु अरं च मल्लि, वंदे सुणिसुव्वयं नमि-
जिण च ॥ वदामि रिट्ठनेमि, पास तव वद्वमाणं च ॥४॥
एवं मए अभियुआ, निहुयस्यमला पहीणजरमरणा । चउ-
वीसं पि जिणगग, तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्तिय-
वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-
हिलाभ, समाहिवरमुत्तम दितु ॥६॥ 'वंदेसु निम्मलयरा,
आडच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दितु ॥७॥

। इच्छामि एमामणो वंदित जाणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
बहुपडिपुएणा पोरिसी, राडयसथारए ठामि ? "इच्छं"

ये कहकर चउक्साय का चैत्यवन्दन करें—

चउकसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणवाणमुसु-
मूरणु । सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवण-
त्तयसामिउ ॥१॥ जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्धउ, सोहइ
फणिमणिकिरणा लिद्धउ, नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो
जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥२॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं,
तिथयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं,
पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं,
लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअग-
राणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं,
धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्खवट्ठीणं
॥६॥ अप्पडिहयवरणाणदंसणधराणं; विअट्ठुउमाणं ॥७॥
जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोह्याणं,
मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमय-
लमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनाम-
धेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥
जे अ अइआ मिद्धा, जे अ भविस्संतिणाए काले ।
संपइअ वट्ठमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि सुखममखो रदिउं जारखिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण उदामि ॥

जारंत केवि माह, भरहेरवय महाविदेहे अ । सन्वेमि
तेमि पणयो, तिविहेण विदव विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसरसाधुभ्यः ॥

उरसगडरं पामं, पामं उदामि कम्मवणमुषं । विसहर-
पिमनिशाम, मगलकृत्ताण-आयाम ॥१॥ निमहर कुलिंगमत,
रुंटे धारंड जो मया मणुयो । तस्म गठरोगमारी, दुद्धजरा
अवि उरगात्र ॥२॥ चिद्धउ दूरं मतो, तुच्छ पणामो वि
बहुफल्लो होइ । नगनिगिणु मि जीरा, पावति न दुक्खदोगव
॥३॥ तुह मम्मत्ते लद्धे, चित्तमगिरुपपापउन्महिण ।
पारति अविग्गेण, जीस अयगमर ठाय ॥४॥ इय संपुयो
मदायग, भनिम्मगनिम्मरेग विथण्ण । ना देव दिज्जवोहिं,
मवे मवे पायनिखचद ॥५॥

(अथ श्रोतों तथा जोइए जय बीजराय कहना)

जय बीजराय । जगगुरु । होउ ममं तुह पमाउयो
मपवं । मरनिवेयो मग्गाणुमागिथा इट्ठफलमिद्धि ॥१॥
लोगविद्धशास्त्री, सुग्गपूया पण्यरग्ग च । मुहगुरुनोगो
नयपरमेस्सा आमममवहा ॥२॥ रागिज्ज जइ वि
नियान पधणं पीअगय तुह ममण । तइ वि मम इज्ज
सेग, मवं मवं तुम्ह वलण्ण ॥३॥ दुक्खाम्मी कम्ममयो,

समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ महएअं, तुहनाह
पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति-शासनम् ॥५॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइय-
संधारा सूत्र पढने के निमित्त मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “इच्छं”
ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहण कर संधारा पोरिसि का पाठ पढे ।

निसीहि, निसीहि, निसीहि, नमो खमासमणाणं गोय-
माईणं महामुणीणं ।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमु-
कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं
हवइ मंगलं ॥१॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चखामि । जाव
पोसहं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अनुक्रम से ये तीनों पाठ तीन दफे बोलना ।)

अणुजाणह जिट्ठिज्जा !

अणुजाणह परमगुरु ! गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा
बहुपडिपुत्ता पोरिसि, राइयसंधारए ठामि ॥ १ ॥

अणुजाणह सयत्त, पाहुनदाणेण चामपासेण ।

कुपुटिपायपमारण, अतरंत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥

ममोडय मंडामा, उव्वट्ठंते अ कायपडिलेहा ।

द-पाटउपयोग ऊमामनिरुमणालोए ॥ ३ ॥

जह मे हुज्ज पमाओ, इमम्म देइस्सिमाइ रयणीए ।

आइरमुयहिदेह, सब्ब तिरिहेण घोमिरिय ॥ ४ ॥

चत्तारि मगल—अरिहता मगल, सिद्धा मगलं,
माहमंगल, केरलीपन्नतो धम्मो मगलं ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
माह लोगुत्तमा, केरलीपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥

चत्तारि मरण परज्जामि—अरिहते मरण परज्जामि,
सिद्धे मरण परज्जामि, माह मरणं परज्जामि, केरलीपन्नत
धम्मं मरण परज्जामि ॥ ७ ॥

पाणादयापमलिय, चोरिक्क मेहुण दणिग्गमुच्चं ।

कोह माण माय, लोहं पिज्ज तद्दा दोम ॥ ८ ॥

फल्लहं, अ-मसराण, पेणुअ रइ-अरइ-ममाउत्त ।

परपग्गियाय मापा-मोमं मिन्द्रत्तमज्ज च ॥ ९ ॥

पोनिरमु इमाइ मुससमग्गमंमग्गग्गिअभूआहं ।

दुग्गाइनिअधगां, अट्ठाग्ग पायठागाइ ॥ १० ॥

एगोज्ज नन्थि मे रोइ, नाहमन्नस्य कम्मइ ।

एरं अदीग्गमण्यो, अप्पाणमणुमागइ ॥ ११ ॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
 सेसा मे बाहिरा भावा, मच्चे संजोगलक्खणा ॥१२॥
 संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरो ।
 तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥१३॥
 अरिहंतो मम देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
 जिनपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥१४॥

(यह १४ वीं गाथा तीन बार कहे, पीछे सात नवकार गुण कर नीचे की तीन गाथा कहे)

खमिअ खमाविअ मइ खमह, सव्वह जीवनिक्काय ।
 सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥१५॥
 सव्वे जीवा कम्मवस, चउदहराज भमंत ।
 ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत ॥१६॥
 जं जं मणेण वद्धं, जं जं बाएण भासिअं पावं ।
 जं जं कायेण कयं, तस्स मिच्छामि दुक्खं ॥१७॥इति॥

रात्रि को पोरिसी पढाने के बाद जब तक निद्रा न आवे तब तक स्वाध्याय ध्यान करे, संथारा दूसरे श्रावक के संथारे से कम से कम एक बेंत छेटी (एक बिलात दूर) बिछाना । बाद मे रात्रि के आखरी प्रहर में उठकर राई प्रतिक्रमण करना और सुबह स्थापनाचार्य जी का पडिलेहण और इरियावहि करने के बाद वस्त्र आदि का पडिलेहण करना उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १५ की ४ थी पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १३ वीं पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें । बाद देववन्दन, सज्जाय

करें वह पु तम मे आगे दिया हुआ है । तेव दर्शन, गुन वदन
वरके मागे हुने डडामण, कुडी, पानी वगैरा गृहस्थ से वापिस
सभलवा देना पीछे आठ पहर का तथा रात्रि का पौषध पारना ।

आठ पहर के तथा रात्रि के पौषध पारने की विधि ।

इच्छामि समाममणो वंदितं जागणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण उदामि ॥

इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ! इरियागहियं पडिक्क-
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिळ्, इरियागहियाए, निराह-
णाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे,
ओसा उत्तिग-पणग दग-मट्टी-मक्कडासताणा मक्कमणे, जे
मे जीना निराहिया एगिंदिया वेदंदिद्या, तेदंदिद्या, चउरिं-
दिद्या, पचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया,
मवट्टिया, परियागिया, क्लिामिया, उद्विया, ठाणाओठाण
मक्कामिया, जीगियाओ गगोत्रिया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण निमोहिकरणेण,
निमल्लीकरणेण, पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए, ठामि
काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उस्ससिएण, नीसमिएण, खासिएण, छीएण,
जंभाइएण, उट्टुएण, वापनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए,
सुट्टुमेहिं अगमचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलसचालेहिं, सुट्टुमेहिं
टिट्ठिसचालेहिं, एममाइएहिं आगारेहिं अमग्गो अपिराहिओ

हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-
रेणं न पारेमि ताव कायं टाणेणं मोणेणं भ्माणेणं अप्पाणं
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे । अरिहंते
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च
वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-
जिणं च ॥ वंदामि रिड्डनेमिं, पासं तह वट्टमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिधुआ, विहुयरयमत्ता पहीणजरमरणा । चउ-
वीसं पि जिणवरा, तिथ्यरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्ति-
य-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
सुहपत्ति पडिले ?

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना-पीछे खमासमण देना-)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जागणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
पोसह पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जागणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
पोमह पारिय 'तहत्ति'

(कहकर दाहिने हाथको चरवले पर रखकर मस्तक भुकाकर
एक नमस्कार मंत्र बोल फिर "सागर चन्दो" की पोषध पारने की
गाथा बहे —

नमो अरिहंताण । नमो मित्राण । नमो आपरियाण ।
नमो उवज्झायाण । नमो लोण सत्तसाहण । एमो पंच
नमुषारो । मच्च पावप्पणामणो । मंगलाण च मज्जेसिं ।
पढम हउड मगल ॥

"सागर चन्दो कामो, चन्दवडिसो मुठमणो धन्नो ।

जेमि पोसह पडिमा, अरुडिआ जीयियते वि ॥१॥

धन्ना सलाहिज्जा, सुलसा आणुड कामदेवा य ।

जाम पससड भयय, दद्वययत्त महावीरो ॥२॥

पोमह विधि मे निया विधि मे पारा विधि करते जो फोटं
अविधि हुई हो वह मय मन यचन काया करणे
मिच्छामि दुष्ट ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
मुहपत्ति पडिलेहुँ ?

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
सामायित्रं पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थए वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिमह भगवन् !
सामायित्रं पारित्रं 'तहत्ति'

(ऐसे कहकर दाहिने हाथ को चरवले पर रखकर मस्तक
झुकाकर एक नवकार मंत्र पढ़कर 'सामायित्रवयजुत्तो'
सूत्र पढे)—

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच
नमुक्कारो । सव्व पावप्पणामणो । मंगलाणं च सव्वेसिं ।
पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायित्रवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो ।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअजत्तिआ वारा ॥१॥ सामाइ-
अंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण
कारेणेशं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

मैंने सामयिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया,
विधिमे जो कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुकड्ड ।

दस मनके, दस वचनके, बारह काया के ये कुल उत्तीस
दोषोंमे से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुकड्ड ।

दिन के चार पहर का पौषध पारने की विधि ।

देवसी या पाक्षिकादि (पक्षी वगैरा) प्रतिक्रमण करने के
बाद पौषध पारने के पहिले मागे हुए डढासण कुडी, पानी वगैरा
गृहस्थ को वापिस सभलवा देना पीछे समासमण देकर
हरियावहि करके चउकसाय चैत्यवन्दन करे, उसकी विधि
इमी पुस्तक के पृष्ठ ५८ की ४ थी पक्ति से आरम्भ होकर
पृष्ठ ६० की ३ री पक्ति तक (जैन जयति शासनम् ॥५॥ तक)
दिया है उसके अनुसार करें । बाद में समासमण देकर पौषध
पारने की मुहपत्ति पढिलेहन करें उसकी विधि इस पुस्तक के
पृष्ठ ६६ की १६ थी पक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ ६६ की ४ थी
पक्ति तक दिया है उसके अनुसार पाँरें ।

❀ इति पौषध विधि समाप्त ❀





❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

❀ त्रिकाल-देववन्दन विधि ❀

(अथ देववन्दन)

देववन्दन करने वाले श्रावक श्राविका पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (वाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नव-कारवाली) आदि रखकर, जमीन पूंजकर, आसन विछाकर, चर-वला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुखके आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के संमुख करके नवकारमंत्र पढ़ें।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सब्बसाहूणं । एसो पंच
नमुक्कारो । सब्बपावप्पणासणो । मंगलाणं च सब्बेसिं पढमं
हवइ मंगलं ॥१॥

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहवंभचेरगुत्तिधरो । चउ-
विहकसायमुक्को, इअ अट्टारस गुणेहिं संजुतो॥१॥ पंच मह-

व्ययजुतो पंचनिहायारपालखसमत्थो । पंचसमिथो तिगुतो,
छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पचिदिय कहे, यन्नि प्रथम से उस स्थान पर आचार्य
प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहा पचिदिय नहीं कहना । पीछे)

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण उदामि ॥

इच्छाकरेण सदिसह भगवन् ! इरियागहियं पडिक्क-
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिऊ, इरियागहियाए, निराह-
णाए, गमणागमणे, पाणमणे, वीयकमणे, हरियकमणे,
ओसा उतिंग-पणग दग-मट्टी-मवडामताणा संक्रमणे, जे
मे जीया निराहिया एगिंदिया वेडदिया, तेडदिया, चउरिं-
दिया, पचिंदिया, अभिहया उत्तिया, लेसिया, सघाड्या,
सघट्टिया, पगियागिया, किलामिया, उदिया, ठाणाओठाण
सकामिया, जीनियाओ उगोणिया तस्म मिच्छामि दुषड ।

तस्म उत्तगीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण निसोहिकरणेण,
विसल्लीकरणेण, पावाण कम्माणं निग्वायण्डाए, ठामि
फाउस्मग्ग ॥

अन्नत्य उममिएण, नीमसिएण, एामिएण, छीएण,
लंमाडएण, उट्टुएण, वायनिमग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए,
मुट्टुमेहिं अगमचालेहिं, मुट्टुमेहिं खेलसंचालेहिं, मुट्टुमेहिं
दिट्ठिमंचालेहिं, एउमाडएहिं आगारेहिं भमग्गो अनिराहियो

हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुका-
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे । अरिहंते
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च
वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मल्लिं, वंदे सुणिसुव्वयं नमि-
जिणं च ॥ वंदामि रिड्डनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिधुआ, विहुयस्यमला पहीणजरमरणा । चउ-
वीसं पि जिणवरा, तिथ्यरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्ति-
वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसंतु ॥७॥

(अब उत्तरासन डालकर खमासण कर चैत्यवंदन करें)

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
चैत्यवंदन करूं ? “इच्छं”

ॐ चैत्यवदन ॐ

श्री गजुन्नय मिद्वत्तेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।

भाय धरी ने जे चढे, तेने मय पार उतारे ॥१॥

थनत मिद्वनो एह ठाम, मरुल तीर्थनो राय ।

पूरु नगाणु' श्रपमदेउ, ज्या ठविया प्रभुपाय ॥२॥

सुरज कु ड सोहामणे, वरलजलथभिराम ।

नाभिराय डुल मडणो, जिनवर करु प्रणाम ॥३॥

ज किंचि नामतित्य, मग्गे पायालि भाणुसे लोए ।

जाइंजिणविवाइ, ताड मज्जाइ वदामि ॥१॥

नमुत्तृणं अरिहताण भगवंताण ॥ १ ॥ आङ्गराण,
विंयपराण, मयमधुद्धाण ॥२॥ पुग्गिमुत्तमाण, पुग्गिममीहाण,
पुग्गिमरपुटरीआण, पुग्गिमरगघहत्थीण ॥३॥ लोग्गुत्तमाण,
लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपंडाण, लोगपज्जोअग-
राण ॥ ४ ॥ अमपटयाण, चक्सुटयाण, मग्गदयाण,
मग्गदयाण, बोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मदेमियाण,
धम्मनापगाण, धम्ममारहीण, धम्मरगचारुंतचयइणी
॥६॥ अप्पटिहपवग्गनागदमणघराण, निअट्टुउमाण ॥७॥
जिणाण आरयाणं, निआण ताग्याण, पुट्टाण चोइयाणं,
मुत्ताणं मोअगाण ॥८॥ मज्जचूग मज्जदग्गिमीण, मियमप-
लमग्गमरातमस्सयम'राहाइवपुग्गगारित्ति, मिद्विगत्ताम-
धेय, टाग मपनाण, नमो जिणाण, निअमपाण ॥९॥

दिद्विसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं
वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपा-
ध्याय सर्वसाधुभ्यः” कहकर थुइ कहना—

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ।
पासं पयासं सुगुणिकठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिचद्धमाणं ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते
कित्तिइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च
वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-
जिणं च ॥ वंदामि रिद्धिनेमिं, पासं तह चद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिधुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-
वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-
वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसंतु ॥७॥

सव्यलोए अरिहंतचेडआखं, करेमि काउस्सगं वदण-
वत्तिआए, पूयणवत्तिआए, सकारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-
आए, बोहिलाभगत्तिआए, निरुवसग्गत्तिआए, सद्वाए,
मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, चड्ढमाणीए, ठामि
काउस्सगं ।

अन्नत्थ ऊमसिएणं, नीससिएणं, रासिएणा, छीएणा,
जमाइएणा, उड्डुएणा, वायनिसग्गेणा, भमलिए, पित्तमुच्छाए,
मुट्टुमेहिं अंगसचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलसंचालेहिं सुट्टुमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहियो
टुज्ज मे काउस्सग्गो, जान अरिहताणा भगवताणा, नमु-
क्कारेणा न पारेमि, तान काय ठाणेण मोखेण भाणेण
अप्पाणा वोसिरामि ॥

(एक नयकार का काउस्सग करके प्रकट कल्लाणन्द की
दूसरी थुड नीचे लिखे अनुसार कहना)

अपारससारसमुदपार, पत्ता सिन दित्तु मुड्डवसार ।
सव्वे जिणिंदा सुगमिंदमंदा, कल्लाणपल्लीण विसालन्द ॥२॥

पुक्खरवरदीपड्ढे, धायडसडे य जजुदीवे अ । भरहेरय-
पिदेहे, धम्माडगरे नमसामि ॥१॥ तम विमिर-पडल-पिद्धं
सणस्म नुरगणनरिंदमहियस्म । सीमाअरस्स उद, पण्फोडिअ
मोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरणमोगपणामयस्म, कल्लाण-
पुक्खल-विमाल-सुहाउदस्म । को देवदाणनरिंदगणचियस्म,

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । आङ्गराणं तित्थ-
 पराणं सयंसंबुद्धाणं । पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिस-वर
 पुंडरीआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं । लोमुत्तमाणं लोगनाहाणं
 लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं
 चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्म-
 दयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-
 चाउरंत चक्खट्ठीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्ठ-
 उमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं
 बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं,
 सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ
 नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइअ
 वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सगं, वंदणवत्तिआए,
 पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहि-
 लाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए,
 धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि
 काउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
 जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,
 सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिद्विमंचालेहि, एवमाडएहि-आगारेहि अभग्गो अनिराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जय अरिहताणं भगवताण, नमुक्का-
रेण न पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेणं भाणेण अप्पाणं
गेमिरामि ।

(एक नवभार का काउस्सग्ग पर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपा-
ध्याय सर्वमाधुभ्य " कहकर शुद्ध कहना—

शंखेश्वर पासजी पूनीए, नरभन्नो लाहो लीजीए,
मननद्धित पूरण सुस्तुरु, जय वामासुत अलवेमरु ॥१॥

लोगस्म उज्जोगगरे, धम्मतिथ्यपरे जिणे । अरिहते
कित्तइस्स, चउवीस पि केमली ॥१॥ उमभमजिय च वदे,
संभवमभिणंदण च सुमड च । पउमप्पह सुपास, जिणं च
चदप्पहं वदे ॥२॥ सुनिहिं च पुप्फदंत, मीयल-सिज्जस
वासुपुज्जं च । निमलमणत च जिण, वम्म सतिं च
वदामि ॥३॥ कुंदु अर च मल्लि, वदे सुणिसुव्वय नमि-
जिण च ॥ वदामि रिद्धिनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥४॥
एवं मए अमिधुया, विहियग्गमला पहीणजरमरणा । चउ-
वीस पि जिणनरा, नित्यपरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्ति-
वटिय-महिया, जे ए लोगस्म उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-
हिलाम, समाहिन्नमुत्तम दित्तु ॥६॥ चदेमु निम्मलयरा,
आडचेमु अहिय पयासयरा । सागरवरगमीरा, मिद्धा सिद्धि
मम दित्तु ॥७॥

सञ्चलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सगं वंदण-
वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-
आए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए,
मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि
काउस्सगं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं
वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके दूसरी थुइ नीचे लिखे
अनुसार कहना)

दोय राता जिनवर अति मला, दोय धोला जिनवर गुणनीला;
दोय नीला दोय शामल कझा, सोले जिन कंचन वर्ण लझा ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंवुदीवे अ । भरहेरवय-
विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विट्ठं
सणस्स मुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ
मोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-
पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स,

धम्मम्म मारमुवल्लम्भ करे पमाय ॥३॥ मिद्वे भो ! पयओ
 णमो जिणमए नदी मया संजमे, देवनागमुवन्नकिन्नरगणस्म-
 ंभूअभाअच्चिए । लोगो जत्थ पडट्टियो जगमिण तेलुकमचा-
 नुर, धम्मो वड्डउ सासओ पिजयओ धम्मुत्तर उड्डउ ॥४॥
 सुअम्म भगवओ करेमि काउस्मग्ग । वंदणवत्तिआए, पृअण-
 वत्तिआए, सङ्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, मोहिलाभ-
 वत्तिआए, निरुपसग्गवत्तिआए । मद्दाए मेहाए धिङ्ग
 धारणाए अणुप्पेदाए वड्डमाणीए ठामि काउस्मग्गं ।

अन्नत्थ ऊममिएण नीससिएणा, एससिएणा छीएणा,
 जंभाइएणा, उट्टएणा, वायनिसग्गेणा, भमलिए, पित्तमुच्छाए,
 सुहूमेहिं अगमंचालेहिं, सुहूमेहिं, खेलमंचालेहिं, सुहूमेहिं
 दिट्ठिमंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अपिराहिओ
 इज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाअ अरिहंताए भगवताए नमु-
 वारेणा न पारेमि, ताअ काय टोणेणा मोणेणा भाणेणां
 अप्पाणा वोमिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्मग्ग तीसरी थुड कहना)

आगम ते जिअर माखियो, गणधर ते हँडे राखियो,
 तेनो रम जेणे चाखियो, ते हूओ गिरमुअ माखियो ॥३॥

मिद्दाए उद्दाए, पारगयाए पपग्गयाए । लोअग्ग-
 मुअगयाए नमो मया मअमिद्दाए ॥१॥ जो देवाण पि

देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, मिरसा
 वंदे महावीरं ॥२॥ इक्को वि नमुकारो, जिणवरवसहस्स
 वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥
 उज्जितसेल्लसिहरे, दिक्खानाणं निमीहिआ जस्स । तं
 धम्मचक्कवट्ठिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस
 दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा,
 सिट्ठा सिट्ठिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं
 करोमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
 जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए,
 सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं
 दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ
 हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमु-
 कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं
 अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-
 पाध्याय सर्वसाधुभ्यः” कहकर चौथी श्रुइ कहना)

धरणीधरराय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणां गुण गावती;
 सहु संघना संकट चूरती, नय विमलनां वंछित पूरती ॥४॥

नमुत्थुण अरिहंताणं भगवंताण ॥ १ ॥ आङ्गराणं,
 तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाणं,
 पुरिसवरपुडरीआणं, पुरिसवरगवहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं,
 लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगर्हवाण, लोगपज्जोअग-
 राण ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण,
 सरणदयाण, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाण, धम्मदेसिआण,
 धम्मनायगाण, धम्ममारहीण, धम्मपरचाउरंतचक्कवट्ठीणं
 ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणढसणधरोण, निअट्ठुल्लउमाण ॥ ७ ॥
 जिणाण जाअयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाणं बोहयाण,
 मुत्ताणं मोअगाण ॥ ८ ॥ मच्चन्नूण सच्चदरिसीण, सिअमय-
 लमरुअमणतमस्सयमव्वाअहमपुणरागिच्छि, सिद्धिगडनाम-
 धेय, ठाण सपत्ताण, नमो जिणाण, जिअभयाण ॥ ९ ॥
 जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्सतिणागए काले ।
 संपइअ वट्ठमाणा, सव्वे तिविहेण उदामि ॥ १० ॥

जाअंति चेइआडं, उड्ढेअअहे अ तिरिअ लोए अ ।
 सव्वाड ताड उदे, इह सत्तो तत्थ सताडं ॥ ११ ॥

इच्छामि एमाममणो उदिउ जाअणिज्जाए निसीहि-
 आए मत्थएण वदामि ॥

जाअत केअि साह, भरहेअय महानिदेहे अ । सवेसि
 तेमि पणओ, तिविहेण तिड ड निरयाणं ॥ १२ ॥

नमोऽर्हत्तिद्धाचार्योपाध्यायसर्गमाधुम्य ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । आङ्गराणं तित्थ-
 यराणं सयंसंबुद्धाणं । पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिस-वर
 पुंडरीआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं । लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं
 लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं
 चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्म-
 दयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-
 चाउरंत चक्कवड्डीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणंधराणं विअट्ठ-
 उमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं
 बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं,
 सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ
 नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअमयाणं ।
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइअ
 वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ
 भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥
 लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो
 तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि
 निआणं वंधणं वीअराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज
 सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ,
 समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ महएअं, तुहनाह

जिणपूआ जिणधुणणं, गुरुधुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
 ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥
 उवसम विवेग संवरं, भासासमिई छजीव करुणा य ।
 धम्मिअज्जणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
 संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।
 सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥



॥ श्री पर्युषण पर्व का चैत्यवन्दन ॥

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नव कल्प विहार ।
 चार मासांतर स्थिर रहे, एहीज अर्थ उदार ॥ १ ॥
 आषाढ शुद्ध चौदश थकी, संवत्सरी पचास ।
 मुनिवर दिन सीत्तेरमे, पडिकमतं चउमास ॥ २ ॥
 श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान ।
 कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थेइ एकतान ॥ ३ ॥
 जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विशाल ।
 प्राये अष्ट भवांतरे, वरीये शिव वरमाल ॥ ४ ॥
 दर्पणथी निज रूपनो, जुए सुदृष्टि रूप ।
 दर्पण अनुभव अर्पण, ज्ञानरमण मुनि भूप ॥ ५ ॥
 आत्मस्वरूप विलोकतां, प्रगट्यो मित्र स्वभाव ।
 राय उदायी खामणां, पर्व पर्युषण दाव ॥ ६ ॥
 नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा ।

पंचमी दिन वाचे सुणे, होय पिरोवी नीमा ॥ ७ ॥

ए नहीं परे पंचमी, सर्व समाणी चोथे ।

भयभीरु मुनि मानशे, भाव्यु अरिहा नाये ॥ ८ ॥

श्रुत केवली घेंयणा सुखी, लही मानव अग्रतार ।

श्री शुभ वीरने शासने, पाम्या जेय जयकार ॥ ९ ॥

॥ श्री वीश स्थानरु तपे चैत्यनन्दन ॥

पहले पद अरिहंत नमु, गीजे सर्व सिद्ध ।

गीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥

नमो येराख पाचमे, पाठरु गुण छडे ।

नमो लोए सब्ब साहस, जे छे गुण गरिडे ॥ २ ॥

नमो नाणस्म आठमे, दर्शन पद घ्यागो ।

निनय करो गुणवंतनो, चारित्र मन भागो ॥ ३ ॥

नमो नंभय धारिण तेरमे किरियाण ।

नमो तपस्म चौदमे, गोयम नमो जिणाण ॥ ४ ॥

३चारित्र ५नाण ५सुग्रस्मने ए, नमो तित्थस्म जाणी ।

जिन उत्तम पद पत्रने, नमता होय सुख ग्राणी ॥ ५ ॥

॥ दूज तिथिरु चैत्यनन्दन ॥

दुविघ्न धर्म जिणे उपदिश्यो, चौथा अभिनंदन ।

बीजे जन्म्या ते प्रभु, भय दुःख निरुदन ॥ १ ॥

१ स्थविर । २ उपाध्याय । ३ सयम । ४ ज्ञान । ५ श्रुतज्ञान,
अथवा श्रुत-सिद्धात, जो ८५ आगम है ।

द्विविध ध्यान तमे परिहरो, आदरो दोष ध्यान ।
 हम प्रकाश्युं सुमति जिने, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥
 दोष बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजीये ।
 मुज परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजीये ॥ ३ ॥
 जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ।
 बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलज्ञान ॥ ४ ॥
 निश्चय ने व्यवहार दोष, एकांते न ग्रहीये ।
 अरजिन बीज दिने चवी, एम जन आगल कहीये ॥ ५ ॥
 वर्तमान चोवीशीए, एम जिन कल्याण ।
 बीज दिने केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥
 एम अनंत चोवीशीए, हुआं बहु कल्याण ।
 जिन उत्तम पद पवने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥

॥ पंचमी का चैत्यवन्दन ॥

त्रिगडे बैठा वीर जिन, भाखे भविजन आगे ।
 त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रांगे ॥ १ ॥
 आराधो भली भातसें, पांचम अजुआली ।
 ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥
 ज्ञान बिना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ।
 ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥
 ज्ञान रहित क्रिया कही, काम कुसुम उपमान ।
 लोकालोक प्रकाश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥

ज्ञानी श्वासोश्वासमा, करे कर्मनो छेह ।
 पूर्ण कोडी वरसा लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥
 देश आराधक क्रिया रुही, सर्व आराधक ज्ञान ।
 ज्ञान तणो महिमा घणो, अग पाचमे भगवान ॥ ६ ॥
 पच माम लघु पचमी, जावाजीव उत्कृष्टी ।
 पंच वरस पच मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि ॥ ७ ॥
 एकावन ही पचनो ए, काउस्तग लोगस्त केरो ।
 उजमणु करो भागशुं, टालो भर फेरो ॥ ८ ॥
 एणी परे पचमी आराधीए, आणी माय अपार ।
 वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥
 ॥ श्री अष्टमी चैत्यवन्दन ॥
 माह शुदी आठम दिने, विजया सुत जायो ।
 तेम फागण शुदि आठमे, समन चवी आव्यो ॥ १ ॥
 चैत्र वदिनी आठमे, जन्म्या अष्टम जिनद ।
 दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
 भाधन शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर ।
 अभिनदन चौथा प्रभु, पाम्या मुख भरपूर ॥ ३ ॥
 एहीज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिनद ।
 आठ जाति कलशे रुही, नमराये सुर इद ॥ ४ ॥
 जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिमुत्रत स्नामी ।
 नेम अपाड शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
 आवण वटनी आठमे, नमि जन्म्या जग भाण ।

तेम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निरवाण ॥ ६ ॥

भाद्रवा वदी आठमं दिने, चविया स्वामी सुपास ।

जिन उत्तम पद पवने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ श्री एकादशी का चैत्यवन्दन ॥

शासन नायक वीरजी, प्रभु कैवल पायो ।

संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥

माधव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ ।

इन्द्रभूति आदि मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥

एकादशसो चउ गुणा, तेहनो परिवार ।

वेद अर्थ अवलो करे, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥

जीवादिक संशय हरी, एकादश गणधार ।

वीरे थाप्या वंदीये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥

मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी ।

ऋषभ अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाती विनाशी ॥ ५ ॥

पद्मप्रभ शिव वास पास, भव-भवना तोडी ।

एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सधली जोडी ॥ ६ ॥

दश क्षेत्रे त्रिहुँ कालनां, त्रणसँ कल्याण ।

वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥

अगीयार अंग लखावीये, एकादश पाठां ।

पुंजणी ठवणी वींटणी, मपी कागल ने काठां ॥ ८ ॥

अगीयार अव्रत छांडवां ए, वहो पडिमा अगीयार ।

चमात्रिजय जिनशामने, सफल करो अगतार ॥ ६ ॥

॥ सिद्धचक्रजी का चैत्यनन्दन ॥

पहले पद अरिहंतना, गुण गायो नित्ये ।

त्रीजे मिद्व तणा धणा, समगे एक चित्ते ॥ १ ॥

आचारज त्रीजे पदे, प्रणमो मिहुँ कर जोडी ।

नमीये श्रीउपभायने, चोथे मेद मोडी ॥ २ ॥

पंचम पद मन साधुनु, नमता न आणो लाज ।

ए परमेष्ठी पंचने, ध्याने अविचल राज ॥ ३ ॥

दसण-शकादिक रहित, पद छडे वागे ।

मरे नाण पद सातमे, छण एक न पिसारो ॥ ४ ॥

चारित्र चोरु चित्तयी, पद अष्टम जपीये ।

सफल मेद बीच दान-फल, तप नममे तपीये ॥ ५ ॥

ए मिद्वचक्र आराधता, पूरे बलित कोड ।

सुमतित्रिजय करिरायनो, राम रुहे का जोड ॥ ६ ॥

॥ दीमाली का चैत्यनन्दन ॥

सिद्धारथ नृप कुल-तिलो, त्रिशला जम मात ।

हरि लडन तनु सात, हाथ, महिमा निर्यात ॥ १ ॥

त्रीश वरस गृहनाम छडी, लिये मयम भार ।

पाग वरस छद्मम्य मान, लही, केवल सार ॥ २ ॥

त्रीश वरस इम मणि मली, बहोतेर आयु प्रमाण ।

दीमाली दिन शिव गपा, नय रुहे ते गुण साण ॥ ३ ॥

॥ श्री पर्युषण पर्व का स्तवन ॥

सुणजो साजन संत पजुसण आव्यारे, तमे पुन्य करो पुन्यवंतः

भविक मन भाव्यारे, (आंकणी)

वीर जिणेसर अति अलवेसर, वाहाला मारा परमेश्वर एम बोलेरे
पर्व मांहे पजुसण महोटां, अवर न आवे तस तोलेरे;

पजुसण आव्यां रे, तमे० १

चउपद मांहे जेम कैसरि मोटो, वा० खगमां गरुड कहीए रे;

नदी मांहे जेम गंगा महोटी, नगमां मेरु लहीए रे, प० २

भूपतिमां भरतेसर भाख्यो, वा० देवमांहे सुर इन्द्र रे;

तीरथमां शेत्रुजो दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चन्द्र रे; प० ३

दशरा दीवाली ने वली होली, वा० अखात्रीज दीवासो रे;

वलेव प्रमुख बहुलां छे बीजां, पण नहीं मुक्तिनो वासोरे प० ४

ते माटे तमे अमर पलावो, वा० अट्टाई महोत्सव कीजे रे;

अट्टम तप अधिकाइए करीने, नरभव लाहो लीजे रे; प० ५

ढोल ददामा भेरी नफेरी, वा० कल्पसूत्र ने जगावो रे;

भांभरनां भमकार करीने, गोरीनी टोली मली आवोरे; प० ६

सोना रूपाने फूलडे वधावो, वा० कल्पसूत्रने पूजो रे;

नव वखाण विधिण सांभलतां, पाप मेंवासी ध्रुजे रे; प० ७

एम अट्टाईनो महोत्सव करतां वा० बहु जीव जग उद्धरियारे;

विवुध विमलवर सेवक एहथी, नवनिधि ऋद्धि सिद्धि

वरियारे; प० ८

॥ श्री दूज तिथिका स्तवन ॥

जीरे मारे प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहंकरु जी;
 जीरे मारे गीज तिथि गुणगेह, आदरो भग्नियण सुन्दर जी
 ॥१॥ जीरे मारे एह दिन पंच कल्याण, निगरीने रुहुं ते
 सुणोजी । जी० मा० महा शुदि गीजे जाण, जन्म अभिनंदन
 तणो जी ॥२॥ जी० आरण शुदिनी हो बीज, सुमति
 चव्या सुरलोकी जी । जी० तारण भगोदधि तेह, तम पद
 सेवे सुर योग्य जी ॥३॥ जी० ममेतशिखर शुभ ठाम,
 दसमा शीतल जिन गणुं जी । जी० चंद्र वदिनी हो बीज,
 पर्या मुक्ति तस सुख प्रणुं जी ॥४॥ जी० फाल्गुन मासनी
 बीज, उत्तम उज्ज्वल मामनी जी । जी० अरनाथ तस च्यवन,
 कर्मक्षये भय पासनीजी ॥५॥ जी० उत्तम मास ज मास, शुदि
 बीजे वामुपूज्यनी जी । जी० एहीज दिन केवलनाण, शरण
 करो जिनराजनो जी ॥६॥ जी० करणीरूप करो खेत,
 समक्षिरूप रोपो तीहाजी । जी० छातर किरिया हो जाण,
 खेड समता ररी जिहानी ॥७॥ जी० उपशम तद्रूप नीर,
 समक्षि छंड प्रगट होवे जी । जी० संतोष करी अहो
 घाड, प्रसन्नगण त्रि चोकी सोहे जी ॥८॥ जी० नासे कर्म
 रिपु चोर, समक्षि वृत्त फल्यो तिहा जी । जी० मांजर
 अनुमय रूप, उत्तरे चारित्र फल जिहा जी ॥९॥ जी० शात
 सुधारम नीर, पान करी सुख लीजिये जी । जी० तमोल

सम लगी स्वाद, जीवने संतोष रस कीजिये जी ॥१०॥
 जी० धीज करो दोय मास, उत्कृष्टी बाबीश मासनी जी ।
 जी० चोविहार उपवास, पालिये शील वसुधासनी जी ॥११॥
 जी० आवश्यक दोय वार पडिलेहण दोय लीजिये जी ।
 जी० देववंदन त्रण काल, मन वच कायाए कीजिये जी
 ॥१२॥ जी० उजमणुं शुभ चित्त, करी धरिये संयोगथी
 जी । जी० जिनवाणी रस एम, पीजिये श्रुत उपयोगथी
 जी ॥१३॥ जी० इण विधि करिये हो बीज, राग ने द्वेष
 दूरे करी जी । जी० केवलपद लही तास, वरे मुक्ति उलठ
 धरी जी ॥१४॥ जी० जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो
 सदा जी । जी० पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा
 जी ॥१५॥

॥ ज्ञानपंचमी का स्तवन ॥

सुत सिद्धार्थ भूपनो रे, सिद्धार्थ भगवान । वारह परखदा
 आगले रे, भाखे श्री वर्धमानो रे; भवियण चित्त धरो, मन
 वच काय अमायो रे; ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आंकणी॥१॥
 गुण अनन्त आतम तणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय । तेहमां
 पण ज्ञानज वडुं रे, जिणथी दरसण होय रे; म०॥२॥ ज्ञाने
 चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय । ज्ञाने धिविरपणुं
 लहे रे, आचारज उवभाय रे; म०॥३॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां
 रे, कठिन करम करे नाश । वहि जेम इन्धन दहे रे,

क्षणमां च्योति प्रकाशो रे, भ० ॥४॥ प्रथम ज्ञान पछी दया
 रे, संवर मोह पिनाश । गुण ठायेंग पंग थालीये रे, जेम चढे
 मोक्ष आवासो रे, भ० ॥५॥ मड सुअ ओहि मणपञ्जवा रे
 पंचम फेगलज्ञान । चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्व पर,
 अंकाश निदानो रे, भ० ॥६॥ तेहना साधन जे कर्खा रे,
 पाटी पुस्तक अंगदि । लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धरी
 अप्रमादो रे, भ० ॥७॥ त्रिनिघ आशातना जे करे रे,
 भणता करे अंतराय । अंधा उहेरा वोमडा रे, मुंगा पागला
 थाय रे, भ० ॥८॥ भणता गुणता न आवडे रे, न मले
 चलम चीज । गुणमंजरी बरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन
 चीज रे, भ० ॥९॥ प्रेमे पूछे परखदा रे, प्रणमी जग-
 गुरु पाय । गुणमंजरी बरदत्तनो रे, कहे अधिकार
 पसायो रे, भ० ॥१०॥

॥ अष्टमी का स्तवन ॥

हारे मारे ठाम घरमना साढा पचवीश देश जो, दीपे रे त्या
 देश मगध सहमा शिरे रे लोल । हा रे मारे नगरी
 तेहमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्या श्रेणिक गाजे
 गज परे रे लोल ॥१॥ हां रे मारे गाम नगर पुर पावन
 करता नाथ जो, विचरता त्या आवी वीर समोसर्पा रे लोल
 हा रे मारे चउद सहम मुनिरनो साथे साथ जो, सूवा रे
 तप संयम शिखले अलक्ष्या रे लोल ॥२॥ हा रे मारे

फूल्या रसभर भूल्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुणशील
 वन हसी रोमांचियो रे लोल । हां रे मारे वाया वाय
 सुवाय तीहां अविलंब जो, वासे रे परिमल चिहुं पासे
 संचियो रे लोल ॥३॥ हां रे मारे देव चतुर्विध आवे कौडा
 कोड जो, त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लोल ।
 हां रे मारे चोसठ सुरपति सेवे होडाहोड जो, आगे रे रस
 लागे इंद्राणी नचे रे लोल ॥ ४ ॥ हाँ रे मारे मणिमय
 हेम सिंहासन वेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरत्ने
 जड्याँ रे लोल । हाँ रे मारे सुणताँ दुंदुभि नाद टले सत्री
 ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानु अब्याँ रे लोल ॥५॥
 हाँ रे मारे ताजे तेजे गाजे घन जेम लुंब जो, राजे रे
 जिनराज समाजे धर्मने रे लोल । हां रे मारे निरखी हरखी
 आवे जन मन लुंब जो, पोषे रे रस न पडे धोखे धर्मने
 रे लोल ॥ ६ ॥ हां रे मारे आगम जाणी जिननो श्रेणिक
 राय जो, आव्यो रे परिवारियो हय गय रथ पायगे रे लोल ।
 हां रे मारे देह प्रदक्षिणा बंदी वेठो ठाय जो, सुणवा रे
 जिनवाणी मोटे भागीये रे लोल ॥ ७ ॥ हां रे मारे त्रिभुवन
 नायक लायक तव भगवंत जो, आणी रे जान करुणा
 धर्मकथा कहे रे लोल । हां रे मारे सहज विरोध विसारी
 जगना जंतु जो, सुणवा रे जिनवाणी मनमां गहगहे
 रे लोल ॥ ८ ॥

॥ एकादशी का स्तवन ॥

समस्तसंख्ये बैठ भगवंत, धर्म प्रकाशे श्रीअरिहंत ।
चार परपदा चेठी रुडी, मागसिर शुदी अगीआरस वडी
॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीक्षाने केवलनाण ।
अरजिन दीक्षा लीधी रुडी, मागसिर शुदी अगीआरस वडी
॥ २ ॥ नमिने उपज्युं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति-
प्रधान । ए तिथिनी महिमा बडी, माग० ॥ ३ ॥ पांच
भरत ऐरावत इमही ज, पांच कल्याणक हुए तिमही ज ।
पचासनी सख्या पगडी, माग० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत
गण ॥ एम, दोढगो कल्याणक धाय तेम । कुण तिथि छे
ए तिथि जे बडी, माग० ॥ ५ ॥ अनंत चोपीशी इण परे
गणो, लाभ अनंत उपपास तणी । ए तिथि सह शिर ए
खडी, माग० ॥ ६ ॥ मौनपणे रखत श्रीमल्लिनाथ, एक
दिवस संयम व्रत माथ । मौन तणी परे नव इम बडी,
माग० ॥ ७ ॥ आठ पहोरी पोसह लीजिए, चौविशार
विधिशुं कीजिये । पण प्रमाद न कीजे धडी, माग० ॥ ८ ॥
चर्पे इग्यार कीजे उपपास, जात्र जीव पण अधिक उल्लाम ।
ए तिथि मोक्ष तणी पावडी, माग० ॥ ९ ॥ ऊजमणुं कीजे
श्रीकार, ज्ञानोपकरण इग्यार इग्यार । करो काउस्सग्ग गुरु-
षाये पडी, माग० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र कीजिजे घली,
शेरी पूजिजे मन रली । मुक्तिपुरी कीजे हुंकडी, माग०

॥ ११ ॥ मौन अग्यारस मोडुं पर्व, आगध्यां सुख लहीये
 सर्व । व्रत पञ्चस्वाण करो आखडी, माग० ॥ १२ ॥
 जेसल सोल इक्यासी समे, कीधुं स्तवन सहु मन गमे ।
 समयसुन्दर कहे दहाडी, माग० ॥ १३ ॥

॥ श्री वीश स्थानक स्तवन ॥

हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती मागुं वचन विलासजो,
 वीशरे तप स्थानक महिमा गाईशूरे लोल ॥ हांरे मारे
 प्रथम अरिहंत पद लोगस्स चौवीसजो, वीजेरे सिद्ध स्था-
 नक पन्नर भावशुंरे लोल ॥ १ ॥ हां० वीजे पवयणसुं
 गणशो लोगस्स सातजो, चउथेरे अ.यरियाणं छत्रीसनो
 सहीरे लोल ॥ हां० ॥ थेराणं पद पंचमे दस उदारजो, छट्ठेरे
 उवज्झायाणं पचवीसनो सहीरे लोल ॥ २ ॥ हां० सातमे
 नमोलोए सब्बसाहु सत्तावीसजो, आठमे नमो नाणस्स पंचे
 भावशुंरे लोल ॥ हां० नवमे दरिसणं सडसठ मनने उदारजो,
 दशमे नमो विणयस्स दस वखाणीएरे ॥ ३ ॥ हां० अग्गी-
 आरमे नमो चारित्तस्स लोगस्स सत्तरजो, बारमे नमो
 वंभस्स नवगुणे सहीरे लो० ॥ हां० ॥ कीरियाणं पदतेरमे
 वली पचवीसजो, चउदमे नमो तवस्स बार गुप्पे सहीरे
 लो० ॥ ४ ॥ हां० पंदरमें नमो गोयमस्स अट्ठावीसजो नमो
 जिणाय चउवीस गणशुं सोलमेरे लो० ॥ सत्तरमे नमो
 चारित्त लोगस्स सित्तेर जो, नाणस्सनो पद गणशुं एकावन

अठारमेरे लो० ॥ ५ ॥ हां० ओगणीसमे नमो सुअस्स वीम
 पीस्नालीसजो, वीसमे नमो तित्थस्स वीम भावसुरे लो० ॥
 हां० तपनो महिमा चारमें उपर वीमजो, पटमासे एरु ओली
 पूरी कीजिएरे लो० ॥ ६ ॥ हां० तप करता वलीगणीये
 दोयहजार जो, नयकारगाली वीसे स्थानरु भावसुरे लो० ॥
 हां० प्रभाजना संघ स्वामी वच्छल सारजो, उजमणां निधि
 कीजिए निनय लीजिएरे लो० ॥ ७ ॥ तपनो महिमा कहो
 श्री वीर जिनरायजो, विस्तारे डम संरंघ गोयम स्वामिनेरे
 लो० ॥ हां० तप करतां वली तीरंकर पद होयजो, देवगुरु डम
 कांनि स्वप्न सोइमणोरे लो० ॥ ८ ॥

॥ श्री सिद्धचक्र स्तवन ॥

श्री श्री पालकुमार ज्वेतवर्ण अरिहंत आराधे, वीतराग
 आतम गुण साधे, अमृतदश मल जार ॥ श्री १ ॥ सिद्ध बुद्ध
 परमात्मा ध्याये, रत्नवर्ण आलमन पाये, सिद्ध आठ गणधार
 ॥ श्री २ ॥ द्युत्तीस गुण आचारज सोहे, पीत वर्ण ध्याये
 मन मोहे, स्वपर तारणहार ॥ श्री ३ ॥ पदे पढ़ाये योग्य
 बनावे, नील वरुण आतम गुण गाये पाठरु पद अवधार
 ॥ श्री ४ ॥ पंचम पद को मोर से भजीए, ज्याम वरण
 सब पाप को तजीए, धन साधु अणगार ॥ श्री ५ ॥ दर्शन
 ज्ञान चरण तप चारे, ज्वेतवर्ण साधन अवधारे निश्चय
 और ध्यवहार ॥ श्री ६ ॥ सिद्धचक्र गुण गाये माये, आतम
 लक्ष्मी दर्प मनावे, गल्लम जय जयकार ॥ श्री ७ ॥

॥ दीवाली स्तवन ॥

जयो जगस्वामी वीरजिनंद ॥ टेर ॥ नगर अपापा
 में प्रभु आये, भविजन को उपकार करंद ॥ ज० १ ॥ निज
 निरवान समय को जानी, सोलां पहर प्रभु धर्म कहंद
 ॥ ज० २ ॥ कार्तिक वदि पंदरसको राते, प्रातः कल प्रभु
 मुक्ति लहंद ॥ ज० ३ ॥ परमात्मा पद छिनक में लीनो,
 आठ कर्म को दूर हरंद ॥ ज० ४ ॥ कन्याणरु निर्वाण
 मोहत्सव, कारण मिलकर आयें सुरींद ॥ ज० ५ ॥ पापा
 नगरी नाम कहायो, अस्त भयो जिहां ज्ञान दिनंद
 ॥ ज० ६ ॥ नव भल्ली नव लेल्ली राजा, शोक अतिशय
 दिल में धरंद ॥ ज० ७ ॥ भाव उद्योत गया अत्र जगसे,
 द्रव्य उद्योत को दीप करंद ॥ ज० ८ ॥ जिस कारण
 दीवाली होइ, ध्यान योगप्रभु वीर जिनंद ॥ ज० ९ ॥
 कार्तिक सुदि एकम् दिन थावे, गौतम केवल ज्ञान गहंद
 ॥ ज० १० ॥ आत्मराम परमपद पावे, बल्लभ चित्तमें हर्ष
 अमंद ॥ ज० ११ ॥

॥ श्री सिद्धाचल जी का स्तवन ॥

जात्रा नवाणुं करीए, विमल गिरि जात्रा नवाणुं
 करीए । पुर्व नवाणुं बार शत्रुंजय गिरि, ऋषभजिखंद
 समोसरीए ॥ वि० ॥ १ ॥ कोटि सहस भव पातक त्रुटे,
 शत्रुंजय सामाडग भरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छट दोय

अठम तपस्या, करी चटिए गिरिवरीए ॥ त्रि० या० ॥३॥
 पु डगिरि पद जपिए मन ढग्वे, अध्यवसाय शुभ घरीए ॥
 त्रि० या० ॥४॥ पार्थी अभव्य न नजरे देवे हिंसक पण
 उद्वरी ए ॥ त्रि० या० ॥५॥ भूमि मथारे ने नारी तणो
 मग, न शरी फी हरीए ॥ त्रि० या० ॥६॥ एकल
 आहारी ने मचित्त पगिहरी, गुरु साथे पद चरीए ॥ त्रि०
 या० ॥७॥ पडिक्मणा दोष विधिशु करीए, पापपडल
 परिहरीए ॥ त्रि० या० ॥८॥ कलिराले ए तीर्थ मोडु,
 प्रवहण जेम भवदरीए ॥ त्रि० या० ॥९॥ उत्तम ए गिरिवर
 सेवता पद रुहे भव तरीए ॥ त्रि० या० ॥१०॥

पुण्य पर्व की स्तुति

मत्तर मेदी जिन पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजे जी ।
 ढोल दमामा मेगी नफेरी, झल्लरी नाद मुणीजे जी ॥
 गीर जिन आगल भावना भावी, मानव भव फल लीजे जी ।
 पर्व पजुमण, पूरव पुण्ये, आर्या एम जारणीजे जी ॥१॥
 मास पाम बली दसम दुवालम, चत्तारि अष्ट कीजे जी ।
 ऊपर बली दण दोय करीने, जिन चोर्वाण पूजीजे जी ॥
 गडा कल्पनो छट्ट करीने, वीर वत्साण मुणीजे जी ।
 पडवेने दिन जन्म महोत्सव, घवल मंगल वरतीजे जी ॥२॥
 आठ दिवस लगे अमर पलायी, अष्टमनो तप कीजे जी ।
 नागकेतुनी परे केवल लहीये, जो शुभ भावे गहीये जी ॥

तैलाधर दिन व्रण कन्यागणक, गणधरवाद, वर्दीजे जी ।
 पास नेमीमर अंतर तीजे, अपम चन्नि सुलीजे जी ॥३॥
 वारसा सुत्र ने मामाचारी, मंवच्छरी पडिकमिये जी ।
 चैत्य प्रवाडी विधिषुं कीजे, मकल जंतु स्वामीजे जी ॥
 पारणाने दिन स्वामीवत्सल, कीजे अधिक वडाई जी ।
 मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरे देवी सिद्धार्थी जी ॥४॥

दूज नियि की स्तुति

दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष । गय राण
 प्रणमे, चन्द्र तणी जिहां रेख ॥ जिहां चन्द्र विमाने, शाध-
 ता जिनवर जेह । हुँ बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह ॥१॥
 अभिनन्दन चन्दन, शीतल शीतलनाथ । अरनाथ सुमनि
 जिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म
 ज्ञान निर्वाण । हुँ बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥२॥
 परकाश्यो बीजे, दुविध धर्म भगवंत । जेम विमल कमल
 दोय, विपुल नयन विकसत ॥ आगम अति अनुपम, जिहां
 निश्चय व्यवहार । बीजे सवी कीजे, पातकनो परिहार ॥३॥
 गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर । चक्केसरी
 केसर, सरस सुगंध शरीर ॥ कज जोडी बीजे, हुँ प्रणमुं
 तस पाय । एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥४॥

॥ पंचमी की स्तुति ॥

आवण शुदि दिन पंचमीये, जन्म्या नेमि जिणंद तो ।
 श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारद को चंद तो ॥

सइस वरस प्रभु आउखु' ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो । अष्ट
 कर्म हेले हणीए, पहोता मुक्ति महंत तो ॥१॥ अष्टापद पर
 आदि जिन ए, पहोत्या मुक्ति मोभार तो । राम पूज्य
 चंपापुरी ए, नेमि मुक्ति गिरनार तो ॥ पातापुरी नगरीमा
 चली ए, श्री वीर तणु' निर्माण तो । मम्मेटगिखर वीश
 सिद्ध हृथा ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥२॥ नेमिनाथ
 जानी हृथा ए, भाखे सार वचनतो । जीव दया गुण बेलठी
 ए, कीजे ताम जतन तो ॥ मृषा न गेलो मानरी ए, चोरी
 चित्त निवार तो । अनंत तीर्थकर डम भणे ए, पग्हिरीये
 पगनार तो ॥३॥ गोमेध नामे यज्ञ भलो ए, देनी श्री अमिका
 नाम तो । शामन मानिष्य जे करे ए, करे उली धर्मना
 काम तो ॥ तपगन्ध नायक गुणनीलो ए, श्री विजय सेन
 खरिख तो । नृपमदास पाय सेवता ए, मफल करो
 अयतार तो ॥४॥

अष्टमी की म्नुति

मंगल आठ करी जम आगल, भाव धरी सुगरान जी,
 आठ जातिना खलश भरीने, नगरवे जिनराज जी ।
 वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव रगता गिय सुर माधेजी,
 आठमनो तप करता अम घर, रंगल कमला पावे ली ॥१॥
 अष्ट कर्म वपरि गज गजन, अष्टापद परे खलिषा जी,
 आठमे आठ मुष्प विचारी, भद आठे तम गलिया जी,
 अष्टमी गति जे पहोना जिनार, परम आठ नहीं अग जी,

॥ श्री वीश स्थानक पद की स्तुति ॥

पूछे गौतम वीर जिणंदा, समवसरण वेठा सुखकंदा, पूजित
 अमर सरिंदा । केम निकाचे पद जिनचंदा, किणविध तप
 करतां भव फंदा, टले दुरितह दंदा ॥ तव भाखे प्रभुजी गन
 निंदा, सुण गौतम वसुभूति नंदा, निर्मल तप अरविंदा ।
 वीश स्थानक तप कर महंदा जिम तारक समुदाये चंदा, तिम
 ए तप सवि इंदा ॥१॥ प्रथम पदे अरिहंत भणीजे, वीजे
 सिद्ध पवयण पद वीजे, आचारज थेर ठवीजे । उपाध्याय ने
 साधु ग्रहीजे नाणदंसण पद विनय वहीजे, अगियारमे चारित्र
 लहीजे ॥ वंभवयधारिणं गणीजे, किरियाणं तवस्स करीजे,
 गोयम जिणाणं लहीजे । चारित्र नाण श्रुत तित्थस्स कीजे
 वीजे भव तप करत सुणीजे, ए सवि जिन तप लीजे ॥२॥
 आदि 'नमो' पद सवले ठवीश, वार पत्तर वल्ली वार छत्रीश,
 दश पणवीश सगवीश, । पांच ने सडसठ तेर गणीश,
 सित्तेर नव किरिया पचवीश, वार अट्ठावीश चौवीस ॥
 सतरा एकावन पीस्तालीश पांच लोगस्स काउस्सग
 रहीश, नवकारवाली वीश । एक एक पदे उपवास ज वीश,
 मास छए एक ओली करीश, एम सिद्धांत जगीश ॥३॥
 शंक्ते एकासणुं तिविहार, छट्ठ अट्ठम मासखमण उदार,
 पडिकमणुं दोय वार । इत्यादिक विधि गुरुगम धार, एक
 पद आराधन भव पार, उजमणुं विविध प्रकार ॥ मातंग

यत्न करे मनोहार, देवी सिद्धाङ्ग शमन रखमाल, विज
मिश्ररण हार । सीमाविजय जन उपर प्यार, शुभ भवियण
धर्मो आधार, श्रीरविजय जयकार ॥४॥

दीयाली श्री स्तुति

मनोहर मूर्ति महार्गीर वर्णी, जिणे सोल पद्मोर देशना
पमणी । नर मल्ली नर लन्ही नृपति सुणी, रुढी शिव
पाम्या विभूजन धणी ॥१॥ शिर पद्मना अक्षम चउदश
भक्ते, गरीज लद्या शिर माम धिते । छट्टे शिर पाम्या वीर
पत्नी, रुक्मिणी रदी अमापम्या निर्मली ॥२॥ आगामी भारी
भार पत्नी, दीयाली रूपे दीह लया । पुण्य पाप फल
अन्वयणे रया, मरी तहति कर्तने मद्या ॥३॥ मरी
जय मिला उद्योत करे, परमाने गौ । म ज्ञान करे । ध्यानमिल
मदगुण विभ्वरे, जिन्यामनमा जयकार करे ॥४॥

श्री उपरान श्री स्तुति ।

बीर जिनेश्वर उपदिने न, मायलो भविय मुजारा नो,
उपरान जिना नवि कानो न, गणेश श्री नरकार नो ।
गौतम्य शुभ पौगरी न, रदीष्ट मुद्र उपरान नो
क्रियापारी आनोपन न, लईवे मुगुर पारनो ॥१॥
पद्म मयलतु' आनोवे न, ए पदेतु उपरान नो;
प्रतिभनतु' आनोवे न, ए पौनु उपरान ना ।

चैत्यः स्तवनलुं मानीये ए, ए चोद्धुं उपधान तोः
 नवी तीर्थकर इम भणे ए, उपधान करो बहुमान तो ॥२॥
 श्रुतस्तवः सिद्धस्तवः ए, छट्टुं वहो उपधान तोः
 शक्रस्तवः जालीये ए, धरीये तृतीय ध्यान तो ।
 नाम स्तव लोमस्तवः ए, पांचमं शुभ उपधान तोः
 श्री मदनमूर्तये नमः ए, नौख्युं श्री जिनराज तो ॥३॥
 महा महोत्सव, आर्वीये ए, श्री गुरुवरनी पास तोः
 नांद नंदीये दाठसुं ए, पधरावी जिनराज तो ।
 श्रीफल द्रव्य चढोवीये ए, ममणिक्यादि मार तो,
 सम्यग् दष्टि मुखि सभे ए, देवी सिद्धायी सहाय तो ॥४॥

चैत्री पूनम की स्तुति ॥६॥

पुंढरीकपंडण गाय प्रणमी जे, आदीश्वर चिनचंदाजी ॥
 नेमि विना त्रेवीश तीर्थकर, गिरि चढिया आणदा जी ॥
 आगममाहि पुंढरीक महिमा, भाख्यो ज्ञान दिणंदाजी ॥
 चैत्री पूनम दिन देवी चक्रेसरी, सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी ॥१॥

१ अरिहंत चेड्याणं० अन्नत्थ । २ पुक्खरवर । ३ सिद्धाणां-
 बुद्धाणं । ४ नमुत्थुणं ।

❀ यह स्तुति (थुई) चार वखत भी कह सकते हैं ।

